# अखिल भारतीय कोंकणी साहित्य परिशद

प्रो. लक्ष्मणराव सरदेसाय नगर.
रामनाथी - गोंय.

# OKHIL BHARATIYA KONKNNI SAHITYA PORISHOD.

Prof. Laxmanrao Sardesai Nagar
Ramnathi - Goem

१८ वें अधिवेशन
18 vem Odhiveshan

१४, १५, १६ डिसेंबर, १९९०.
14, 15, 16 Dec. 1990.

# येवकार गीत

—रमेश भगवंत वेळुस्कार

तरा तरांची उतरां गुथून
तुमकां येवकारतां
रसीक तुमी रसज्ञ तुमी
तुमकां येवकारतां ॥धृ.॥

आबोल्यांची बोली आमची
तुमच्या स्वागताक
रोजां रोजांची वजीं मोगाचीं
तुमच्या परामसाक
ह्यो जायो मोग जुयो
काळजान सावन ओपतां
तरा तरांची उतरां गुथून
तुमकां येवकारतां. ॥१॥

ह्या काजुंची ह्यां आंब्याची
शितळ हि वनराय
तुमच्या माथ्यार छत्र उबयता
कल्पतरूंचे राय
मंगलकर्तो मंगेशूय हो
सासाय शिवरता
तरा तराची उतरां गुथून
तुमकां येवकारतां. ॥२॥

सागर जालो दूदसागर
धुवपाक तुमचे पांय
गंगा जाल्या तुमचे खातीर
हांगची बांयेन बांय
सगळीं काळजां मोगाळ काळजां
तुमचे थांय ओपतां
तरा तरांची उतरां गुथून
तुमकां येवकारतां. ॥३॥

मोट्या मनाचे रसंज्ञ तुमी
आमकां समजतले
चुकल्या माकल्यांर आमकां तुमी
समजून रे घेतले.
मोगा मोगाचें श्रीफळ तुमच्या
पायांर उखलासतां. ॥४॥
तरा तरांची उतरां गुथून
तुमकां येवकारतां

**CHIEF MINISTER**



MAHARASHTRA

Mantralaya, Bombay 400 032
Date : October 30, 1990

# MESSAGE

I am glad to know that the 18th All India Konkani Sahitya Parishad will be held at Ramnathi, Goa.

As this is the first session after Goa bacame a State with Konkani as the official language, it has a special significance.

I hope this conference will pave the way for more intense exchange of views and interaction between the votaries of Konkani and Marathi.

I extend my warm greetings to the organizers and the participants. I wish the Parishad every success.

Sd / -

(Sharad Pawar)

TRIVANDRUM
November 7, 1990

**E. K. NAYANAR**
CHIEF MINISTER, KERALA

# MESSAGE

I am happy to note that the Parishad is having its 18th Session at Ramnathi, Goa from 14th to 16th December, 1990 and that you are bringing out a Souvenir on the occasion.

I send you my greetings and wish you all success.

Sd/-
E. K. NAYANAR

Shri Manikcrao Gaunekar,
Chairman,
Reception Committee
All India Konkani Sahitya Parishad
18th Session, Aguiyar Building,
Ponda Tisk
Ponda - Goa - 403401.

# अखिल भारतीय कोंकणी साहित्य परिशद

## अठरावें अधिवेशन

प्रो. लक्ष्मणराव सरदेसाय नगर

रामनाथी - गोंय

## – कार्यावळ –

**शुक्रार ता. १४ डिसेंबर १९९०**

सां. ४.३० – दरवटयाकडेन येवकार

४.४५ – पुस्तक प्रदर्शनाचें उक्तावण : डॉ. जुझे पेरेर

५.०० – **उक्तावण समारंभ**

(निवेदन : नारायण देसाय आनी विनंती कासार)

– येवकार गीत
– येवकार अध्यक्षालें उलोवप : श्री. माणिकराव गावणेकार
– हार तुऱ्यांची भेटवण
– दिवली पेटोवन उद्घाटन.
– उद्घाटकाचें उलोवप
– संदेश वाचन
– परिशदेचो नियाळ
– अध्यक्षी सूत्रांचो स्वीकार
– पुस्तक प्रकाशन : डॉ. जुझे पेरेर
– यादस्तीक प्रकाशन
– अध्यक्षांचें उलोवप : प्रो. आर. के. राव
– मानेस्तांचो भोमान
– उपकार

– सुपुल्ली सांस्कृतीक कार्यावळ

रा. ९.३० – **तरेकवार सांस्कृतीक कार्यावळ**

## शेनवार ता. १५ डिसेंबर १९९०

सकाळीं ९ ते
१० – वळख

१०.०० – चर्चा : **कोंकणी समाज आनी शिक्षण**

(निवेदन : प्रा. श्याम वेरेंकार )

अध्यक्ष : प्राचार्य माधव कामत

पेपर :

१. डॉ. विली डि सिल्वा
२. श्री. कमलाकर म्हाळशी
३. प्रो. वे. मा. बोर्जिस

दनपारां २.३०
ते ५.०० – **विशय नियामक समितीची बसका**

सां. ५.०० – **काव्यदर्शन : नामनेच्या कवींचें कवी संमेलन**
अध्यक्ष : डॉ. मनोहरराय सरदेसाय
सूत्रसंचलन : श्री. दामोदर मावजो

रा. ९.३० – **सांस्कृतिक कार्यावळ**

## आयतार ता. १६ डिसेंबर १९९०

सकाळीं ९.३० – चर्चा : **कोंकणीच्या उदरगतीच्या वावरांत तरनाटयांचो वाटो**

(निवेदन : उल्हास नायक)

अध्यक्ष : श्री. दत्ता दामोदर नायक

पेपर :

१. श्री. प्रकाश वजरीकार
२. श्री. थाल्मन पेरेर

११.३० – पॅनल डिस्कशन : **साहित्य-निर्मिती, प्रकाशन, वितरण आनी वाचकांची अपेक्षा**

(निवेदन : जयंती नायक)

सूत्रसंचलन : श्री. नागेश करमली

वांटो घेवपी :

१. श्री. चंद्रकांत केणी
२. श्रीमती हेमा नायक
३. डॉ. ओलिव्हीन्य गॉमिश
४. श्री. मेल्वीन रोड्रीग्ज
५. श्री शरदचंद्र
६. डॉ. तानाजी हळर्णकार
७. श्रीमती वैजयंती प्रभु
८. श्रीमती ज्योत्स्ना कामत

दनपारां २.३० – **कवीसंमेलन**

सां. ४.०० – **उक्ती बसका**

(निवेदक : आग्नेल पिरिश आनी वसंत भगवंत सावंत)

– आरंभाची उतरां

– विशय नियमक समितीच्या वावराचो नियाळ : श्री. रवीन्द्र नमशिकार

– थारावांचेर उलोवपां

– हेर राज्यांतल्या प्रतिनिर्धिचीं उलोवपां

– अध्यक्षांचीं समारोपाचीं उतरां

– उपकार

रा. ९.३० – **सांस्कृतीक कार्यावळ**

# Okhil Bharatiya KonKnni Sahitya Parishad

**Ctthravem Odhiveshan**

**Prof. Laxmanrao Sardesai Nogor**

Ramnathi - Goem

## - Kariavoll -

**Sukrar, 14 December 1990**

Sanj. 4.30 - Dorvotteakodden levkar
- Pustok Prodorshonachem
  Uktavonn : **Dr. Jose Pereira**

5.00 - **UKTAVONN SAMAROMBH**
  (Nivedon : Narayan Desai ani Vinanti Kasar)
- Ievkar git
- Ievkar od'dhekxalem Uloup
  **Shri Manikrao Gaunekar**
- Har-tureanchi Bhetvonn
- Divli Pettovn Uktavonn
- Udghattokachem Uloup
- Sondex Vachon
- Parishadecho Niall
- Od'dhekxi Sutrancho Swikar
- Pustok Prakaxan : **Dr. Juse Pereira**
- Iadostik Prakashan
- Od'dhekxanchem Uloup:
  **Prof. R. K. Rao**
- Manestancho Bhouman
- Upkar
- Supul'li Sanskrutik Kariavoll

Ratichea 9.30 - **Torekvar Sanskrutik Kariavoll**

## Xenvar, 15 December 1990

Sokalim
9 tim 10 - Vollokh

10,00 - Chorchea : **Konknni Somaz ani Xikxonn**
(Nivedon : **Prof. Sham Verenkar**)

Od'dhex -
**Pracharya Madhav Kamat**

Paper -
1. **Dr Willie D'silva**
2. **Shri Kamlakar Mhalsi**
3. **Prof. S. M. Borges**

Donparam
2.30 tim 5.00 - **Vixoi niyamak omitichi Boska**

Sanj. 5.30 - **Kaveadorshan : Namneche Kovinchem Kovisammelan**

O'dhekx : **Dr. Manoharai Sardesai**

Sutrosanchalon - **Shri Damodar Mauzo**

Ratichea 9.30 - **Sanskrutik Kariavoll**

## Aitar, 16 December 1990

Sokalim 9.30 - Chorchea : **Konknnichea Udorgotichea Vavrant Tornateancho Vantto**

(Nivedon: **Ulhas Naik**)
O'dhex : **Shri Datta D. Naik**

Peper -
1. **Shri Prakash Vazrikar**
2. **Shri Thalman Pereira**

11.30 - Panel Discussion : **Sahitya Nirmiti, Prakaxon, Vitoronn, ani Vachpeanchi Opekxa**

(Nivedon : **Jayanti Naik**)

Sutrasanchalon - **Shri Nagesh Karmali**

Vantto gheupi :

1. **Shri Chandrakant Keni**
2. **Smt. Hema Naik**
3. **Dr. Olivinho Gomes**
4. **Shri Melwyn Rodrigues**
5. **Shri Sharadchandran**
6. **Dr. Tanaji Halarnkar**
7. **Smt. Vaijayanti Prabhu**
8. **Smt. Jotsna Kamat**

Donparam 2.30 - **Kovisommelan**

Sanj. 4.00 - **Ugti Boska**

(Nivedon: **Agnel Peres ani Vasant B. Sawant)**

- Arombhachim Utram
- Vixoi Niyamok Somitichea Vavracho Niall : **Shri Ravindra Namshikar**
- Tharavancher Uloupam
- Her Rajhantolea Protinidhinchi uloupam
- O'dhekxachi Samaropachim Utram
- Upkar

Ratichea 9.30 - **Sanskrutik Kariavoll**

अ. भा. कोंकणी साहित्य परिशदेच्या
१८ व्या अधिवेशनांत

# मानेस्तांचो सत्कार

**प्रो. लुर्दीनु रोद्रीगिश**
कोंकणीचें संशोधन, व्याकरण, शब्दकोश
ह्या मळांचेर मोलादीक वावर

**श्री. नरहरी वळवयकार**
नाटक, संगीत, भजन ह्या मळांचेर
मोलादीक वावर

**श्री. ज्यासीन्त व्हाज**
तियात्र बरोवपाच्या मळार
आनी कोंकणी पाललार म्हत्वाचो वावर

**श्री. चा. फ्रा. दिकोस्ता**
कविता, पत्रकारिता, नाटक ह्या मळांचेर
म्हत्वाचो वावर - साहित्य अकादेमीचो पुरस्कार

**श्री. कृष्णा लक्ष्मण मोयो**
रंगमाची, आनी नाट्य-लेखन
ह्या मळांचेर मोलादीक वावर

**भौ. स्वामी सुप्रिय, फादर सी. सी. ए. पै**
साहित्य, लोकवेद, लोककला
ह्या मळांचेर मोलादीक वावर

**श्री. श्रीपाद रघुनाथ देसाय**
संस्कृत साहित्याचो कोंकणी अणकार,
शब्दकोश, कोंकणी भाशेचो इतिहास
ह्या मळांचेर मोलादीक वावर

**श्री. पी. जी. कामत**
साहित्य, संपादन, कोंकणीविशींची
जागृताय ह्या मळांचेर मोलादीक वावर

# खेळ

**बरी भलायकी आनी करमणुकीखातीर ...**
**खेळांचे उदरगतीपासत सरकार कसो वावुरता हाची तुमकां खबर आसा ?**

※ कर्तृत्वी खेळगड्यांक आनी युवकांक राज्यपुरस्कार भेटयता.

※ खेळां-प्रकल्प आनी विविध-उपेगी सभाघरां उबारता,

※ पंचायत आनी तालुको वाठारांत खेळांमैदानांच्या विकासाखातीर अनुदान दिता.

※ मुळाव्या, माध्यमिक आनी उच्चमाध्यमिक विद्यालयांखातीर खेळां-उत्सव घडोवन हाडटा.

※ प्रावीण्य मेळोवपी खेळगड्यांक शिष्यवृत्त्यो भेटयता.

※ खेळांवयले बरपावळीक उत्तेजन दिता.

※ व्यायाम-शाळा स्थापन करता.

- उपकार -

# हांणी खर्चाचो भार उखल्लो आनी आमकां आदार दिलो

ह्या अधिवेशनांत वांटो घेतिल्ल्या सगल्या प्रतिनिधींच्या खाणा - जेवणाच्या खर्चाचो भार आमच्या ह्या बरें - मागत्यांनी उखल्लो.

* **गोवा कोंकणी अकादेमी**
  GOA KONKANI AKADEMI
  पणजी, गोंय

* **हाउस ऑफ धेंपो**
  HOUSE OF DEMPO
  पणजी, गोंय

* **मेसर्स आल्कॉन कन्स्ट्रक्शन्स**
  M/s ALCON CONSTRUCTIONS
  पणजी, गोंय

* **श्री. एम. एस. प्रभू**
  XRI M.S. PRABHU
  मडगांव, गोंय

* **मेसर्स नरसिंह दामोदर नायक**
  M/s NARCINVA DAMODAR NAIK
  मडगांव, गोंय

* **मेसर्स गोवा बॉटलींग कं. प्रा. लि.**
  M/s GOA BOTTLING Co. Pvt. Ltd.
  मडगांव, गोंय

## आमी तांचे उपकारी आसात

अध्यक्ष,
येवकार समिती,
अ. भा. कोंकणी साहित्य परिशद : १८ वें अधिवेशन

अ. भा. कोंकणी साहित्य परिशदेच्या १८ व्या अधिवेशनाक

आमची परबीं

# कोंकणी भाशा मंडळ, गोंय

कोंकणीची सेवेंत

मडगांव हांगासर

विद्या भुवन, के. जी. वर्ग आनी मुळावी शाळा चलयता



शाळेचीं पुस्तकां उजवाडायता



साहित्यीक आनी सांस्कृतीक कार्यावळी घडोवन हाडटा

– मंडळाची मुखेल कचेरी –

४९ बी, इराज्मु कान्र्हाल्यु मार्ग,
मडगांव, गोंय – ४०३६०१

– पणजेंतली कचेरी –

टी. बी कुन्हा हॉल, आझाद मैदानालागीं
पणजी, गोंय – ४०३००१

## अखिल भारतीय कोंकणी साहित्य परिशद
## १८ वें अधिवेशन
## Okhil Bharatiya Konknni Sahitya Porishad
## 18 vem odhiveshan

# येवकार समितीची वावुरपी समिती
# Ievkar Somitichi Vavurpi Somiti

| | |
|---|---|
| **येवकार अध्यक्ष** | **Ievkar Od'dheokx** |
| श्री माणिकराव गावणेकार | Shri Manikrav Gaunekar |
| **उपाध्यक्ष** | **Upad'dheokx** |
| डॉ. जयवंतराव सरदेसाय | Dr. jaivantrao Sardesai |
| फा. मोरेन सौझ | Fr. Moureno Souza |
| श्री आंतोन पियेदाद मोरायस | Shri Antonio Piedade Moraes |
| ,, यशवंत पालेकार | ,, Yeshvant Palekar |
| ,, इनास ग्रासियस | ,, Enas Grasias |
| ,, ज्योईल्ड आगीयार | ,, Joeldo Aguiar |
| ,, उपेन्द्र गावणेकार | ,, Upendra Gaunekar |
| श्रीमती निर्मला सावंत | Smt. Nirmala Savant |
| डॉ. जुजे एफ. मार्टीन्स | Dr. Jase f. Martins |
| **सरचिटणीस** | **Sorchittnnis** |
| श्री. एन. शिवदास | Shri N. Shivdas |
| **जोडचिटणीस** | **Zodd-chittnnis** |
| श्री अभयकुमार वेलींगकार | Shri Abhaikumar Velingkar |
| ,, आनंद मंगेश नायक | ,, Anand Manguesh Naik |
| ,, जॉन आगियार | ,, John Aguar |
| ,, महेश पारकार | ,, Mahesh Parkar |
| श्रीमती रोशन प्रभु | Smt. Roshan Prabhu |
| **कोशाध्यक्ष** | **Koxad'dekx** |
| श्री. प्रकाश आचार्य | Shri Prakash Acharya |

## येवकार समितीचे वांगडी

श्री दुर्गादास गावडे
,, आगुस्तीन डि. कोस्ता
,, परशुराम प्रभू देसाय
,, चन्द्रकांत कृष्णा नायक
,, संजीव वेलींग
,, राजेन्द्र कृष्णा नायक
श्रीमती संगीता अ. नायक
,, सविता म. नायक
,, लीना ना. नायक
,, शांता कृ. नायक
,, कांचन वि. नायक
श्री गोविंद सतरकार
,, भिकू बोमी नायक
,, महाबळेश्वर बोरकार
,, संतोश केरकार
अॅड्. प्रकाश थळी

आनी

**कोंकणी भाशा मंडळाचे
कार्यकारी समितीचे
सगले वांगडी**

## levkar Somitiche Vangadi

Shri Durgadas Gavde
,, Agostin D. Costa
,, Parshuram Prabhudesai
,, Chandrakant K. Naik
,, Sanjiv Veling
,, Rajendra K. Naik
Smt. Sangita A. Naik
,, Savita M. Naik
,, Lina N. Naik
,, Shanta K. Naik
,, Kanchan V. Naik
Shri Govind Satarkar
,, Bhiku Bomi Naik
,, Mahabaleshwar Borkar
,, Santosh Kerkar
Adv. Prakash Thali

Anik

**Konkani Bhasha Mandalache
Karyakari Somitiche
Soglle Vangadi**

## सल्लागार मंडळ

श्री रवीन्द्र केळेकार
,, चन्द्रकांत केणी
डॉ. मनोहरराय सरदेसाय
श्री यशवंत पालेकार
अॅड्. उदय भेंब्रो
श्री पुंडलीक नायक
,, तोमाझिन कार्दोज
,, गुरुनाथ केळेकार

## Sollagar Mondoll

Shri Ravindra Keleker
,, Chandrakant Keni
Dr. Manoharai Sardesai
Shri Yeshvant Palekear
Adv. Uday Bhembro
Shri Pandalik Naik
,, Tomazinho Cardozo
,, Gurunath Kelekar

## Xikxann Satra Sollagar Somiti

## शिक्षण सत्र सल्लागार समिती

| | |
|---|---|
| प्रा. श्याम वेरेंकार (निमंत्रक) | Prof. Sham Verenkar (Nimontrok) |
| श्री सतिश दळवी | Shri Satish Dalvi |
| ,, श्रीधर बांबोळकार | ,, Shridhar Bambolkar |
| ,, अजित केरकार | ,, Ajit Kerkar |
| ,, कमलाकर म्हाळशी | ,, Kamlakar Mhalshi |
| ,, रवीन्द्र नमशिकार | ,, Ravindra Namshikar |
| ,, श्रीधर वेरेंकार | ,, Shridhar Verenkar |
| ,, सुमंत केळेकार | ,, Sumant Kelekar |
| ,, वसंत गावडे | ,, Vasant Gavde |
| ,, राम कुंकळयेकार | ,, Ram Kunkolenkar |
| ,, नारायण देसाय | ,, Narayan Desai |
| प्रा. सुमन सामन्त | Pra. Suman Samant |
| श्री फेलिसिओ कार्दोज | Shri Felicio Cardozo |

## कार्यावळ समिती — Karvyavoll Somiti

| | |
|---|---|
| अॅड्. उदय भेंब्रो (निमंत्रक) | Adv. Uday Bhembro (Nimontrok) |
| श्री यशवंत पालेकार | Shri Yeshvant Palekar |
| ,, पुंडलीक नायक | ,, Pundalik Naik |
| ,, फेलिसिओ कार्दोज | ,, Felicio Cardozo |
| ,, नागेश करमली | ,, Naguesh Karmali |
| ,, प्रेमानंद लोटलीकार | ,, Premanand Lotlikar |
| प्रा. श्याम वेरेंकार | Pra. Sham Verenkar |
| श्री रवीन्द्र नमशिकार | Shri Ravindra Namshikar |

| संस्कृतीक कार्यावळ समिती | Sanskrutik Karyavoll Somiti |
| --- | --- |
| ॲड्. प्रकाश थळी (निमंत्रक) | Adv. Prakash Thali (Nimontrok) |
| श्रीमती विजया कोमारपंत | Smt. Vijaya Komarpant |
| श्रीमती रोशन प्रभू | Smt. Roshan Prabhu |
| श्री अजित केरकार | Shri Ajit Kerker |
| ,, श्रीधर कामत बांबोळकर | ,, Shridhar Kamat Bambolkar |
| ,, चंन्द्रकांत कृ. नायक | ,, Chandrakant K. Naik |
| ,, उदय सावंत | ,, Uday Sawant |
| ,, नामदेव नायक | ,, Namdev Naik |
| ,, कृष्णनाथ तळावलीकार | ,, Krishnanath Talawalikar |
| ,, रघुनाथ साकोर्डेकार | ,, Raghunath Sakordekar |
| ,, संजीव वेलींग | ,, Sanjiv Veling |
| ,, रामानंद रायकार | ,, Ramanand Raikar |
| ,, पुर्णानंद च्यारी | ,, Purnanand Chari |
| ,, विजय सामंत | ,, Vijay Samant |
| ,, शाणूदास सावंत | ,, Shanudas Sawant |

| निवास वेवस्था समिती | Nivas Vevostha Somiti |
| --- | --- |
| श्री महाबळेश्वर बोरकार –(निमत्रंक) | Shri Mahabaleshwar Bokar (Nimontrok) |
| ,, गोविंद सतरकार | ,, Govind Satarkar |
| ,, नारायण मावजो | ,, Narayan Mauzo |
| ,, रामनाथ गावडे | ,, Ramnath Gaude |
| ,, देविदास गांवकार | ,, Devidas Gaunkar |
| ,, अविनाश फोंडेकार | ,, Avinash Fondekar |
| ,, दामोदर भगत | ,, Damodar Bhagat |
| ,, उदय गांवकार | ,, Uday Gaunkar |
| श्रीमती शांती प्रभु तेंडुलकार | Smt. Shanti Prabhu Tendulkar |

## येरादारी समिती

श्री सुरेश केरकार (निमंत्रक)
,, निकोलस डायस
,, गोविंद सतरकार
,, गोकुळदास गांवकार
,, उदय सावंत

## Yeradari Somiti

Shri Suresh Kerkar (Nimontrok)
,, Nicolas Dias
,, Govind Satarkar
,, Gokuldas Gaunkar
,, Uday Sawant

## क्षेत्रीय प्रचार समिती

श्री अभयकुमार वेलींगकार
(निमंत्रक
,, आर. बी. एस. कोमारपंत
,, बाबली नायक
,, अशोक कामत
,, आनंद मं. नायक
,, गोविंद सतरकार
श्रीमती शांती तेंडुलकार
श्री कृष्णनाथ फोगेरी
,, शशिकांत पुनाजी
,, उदय देशप्रभू
,, जॉन मार्तीस
श्रीमती अमिता सुर्लकार
श्री कृष्णनाथ तळावलीकार
,, दामोदर घाणेकार

## Kxetriya Prochar Somiti

Shri Abhaykamar Velingkar
(Nimontrok)
,, R. B. S. Komarpant
,, Babli Naik
,, Ashok Kamat
,, Anand M. Naik
,, Govind Satarkar
Smt. Shanti Tendulkar
Shri Krishnanath Fogeri
,, Shashikant Punaji
,, Uday Deshprabhu
,, John Martis
Smt. Amita Surlakar
Shri Krishnanath Talawalikar
,, Domodar Ghaneker

## जेवण-खाण समिती

ॲड्. मनोज बांदोडकार (निमंत्रक)
श्री रॉक काब्राल
,, शंभुनाथ केरकार
,, रोहिदास कुरपासकार
,, संतोष केरकार

## Jevonn-Khann Somiti

Adv. Manoj Bandodkar
(Nimontrok)
Shri Rock Cabral
,, Shambhunath Kerkar
,, Rohidas Kurpaskar
,, Santosh Kerkar

| | |
|---|---|
| ,, विजयकांत नमशिकार | ,, Vijaykant Namshikar |
| ,, प्रविण बांदोडकार | ,, Pravin Bandodkar |
| ,, दामोदर तिळवे | ,, Damodar Tilve |
| ,, अरूण काळे | ,, Arun Kale |
| ,, उमेश नायक | ,, Umesh Naik |
| ,, संतोष नमशिकार | ,, Santosh Namshikar |
| ,, सुरेश केरकार | ,, Suresh Kerkar |
| ,, अशोक रायकार | ,, Ashok Raikar |

## पुस्तक प्रदर्शन समिती / Pustok Pradarshan Somiti

| | |
|---|---|
| ,, श्री आंतोन पियेदाद मोरायश (निमंत्रक) | Shri Antonio Peídade Morais (Nimontrok) |
| ,, आक्तानिओ रोद्रीगिश | ,, Octanio Rodrigues |
| ,, मिनिनो पेरीस | ,, Menino Peres |

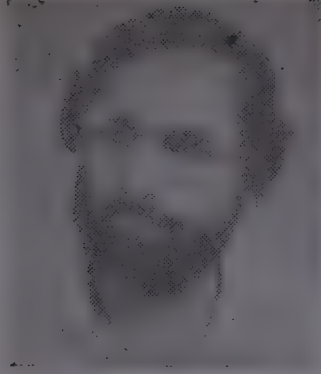
## जाहिरात आनी निधी समिती / Jairat ani Nidhi Somiti

| | |
|---|---|
| डॉ. जयवंतराव सरदेसाय (निमंत्रक) | Dr. Jaivantrao Sardesai (Nimontrok) |
| श्री महाबळेश्वर बोरकार | Shri Mahabaleshwar Borkar |
| ,, चंद्रकांत केणी | ,, Chandrakant Keni |
| अॅड्. उदय भेम्ब्रो | Adv. Uday Bhembro |
| श्री सुश्रुत मार्टीन | Shri Sushrut Martins |
| श्रीमती विजयाबाय सरमळकार | Smt. Vijayabai Sarmalkar |
| ,, शिला ज्योती सरमळकार | ,, Shila Jyoti Sarmalkar |
| श्री प्रशांत केरकार | Shri Prashant Kerkar |
| ,, जॉन आगियार | ,, John Agiar |
| ,, सतिश दळवी | ,, Satish Dalvi |
| ,, बाबय वेरेंकार | ,, Babai Verenkar |
| ,, शिवानंद नायक कोमारपंत | ,, Shivanand Naik Komarpant |

## युवा – आपवावुरपी समिती / Yuva Ap-Vavurpi Somiti

| | |
|---|---|
| श्री उल्हास यशवंत नायक (निमत्रंक) | Shri Ulhas Yeshvant Naik (Nimontrok) |
| ,, दिलीप शि. नायक | ,, Dilip s. Naik |

| | |
|---|---|
| ,, मनोहर भिंगी | ,, Manohar Bhingi |
| ,, जयंत तळावलीकार | ,,Jayant Talawalikar |
| ,, गोपिनाथ रायकार | ,, Gopinath Raikar |
| ,, उदय सावंत | ,, Uday Sawant |
| ,, पुर्णानंद च्यारी | ,, Purnanand Chari |
| ,, श्रीकांत पालसरकार | ,, Shrikant Palsarkar |
| ,, जॉन मार्टीन्स | ,, John Martins |
| श्रीमती शांती तेंडुलकार | Smt. Shanti Tendalkar |
| ,, सुरेखा तोटेकार | ,, Surekha Totekar |
| ,, उज्वला वेलींगकार | ,, Ujwala Velingakar |
| श्री जयराम वाघुर्मेकार | Shri Jairam Vagurmekar |
| ,, संदीप निगळये | ,, Sandip Nigalye |
| ,, संदेश नायक | ,, Sandesh Naik |
| ,, विन्सी क्वाद्रूस | ,, Vincy Quardros |
| ,, निरज नायक | ,, Niraj Naik |
| ,, रत्नदीप वस्त | ,, Ratndeep Vasta |
| ,, दिनेश मणेरकार | ,, Dinesh Manerkar |
| ,, वसंत सावन्त | ,, Vasant Sawant |
| ,, परशुराम प्रभू देसाय | ,, Parshuram Prabhu desai |
| ,, नामदेव नायक | ,, Namdev Naik |
| ,, प्रसाद नायक | ,, Prasad Naik |
| ,, पोकू काशिनाथ नायक | ,, Poku Kashinath Naik |
| ,, उल्हास नायक | ,, Ulhas Naik |
| ,, उदय गांवकार | ,, Uday Gaunkar |
| ,, राजेन्द्र कृ. नायक | ,, Rajendra K. Naik |
| श्रीमती शांती अच्युत नायक | Smt. Shanti Achut Naik |
| श्री महेश नायक | Shri Mahesh Naik |
| ,, अनिल नावेलकार | ,, Anil Navelkar |
| ,, प्रकाश तळवणेंकार | ,, Prakash Talawanekar |
| ,, महेश कोनेकार | ,, Mahesh Konekar |
| ,, धनदास नायक | ,, Dhandas Naik |
| ,, दिलीपकुमार च्यारी | ,, Dilipkumar Chari |



**श्री. एन. शिवदास**

परिशदेच्या अठराव्या अधिवेशनाचे सरचिटणीस



अठराव्या अधिवेशनाचे येवकार समितीची वावुरपी समिती

# मणिपाल हांगासर जाल्ल्या सतराव्या अधिवेशनाचे उगडास



अधिवेशनांक आरंभ जावचे आदीं परिशदेचे नवे अध्यक्ष श्री. माधव कामत, आदले अध्यक्ष श्री. उदय भेंब्रे आनी येवकार अध्यक्ष श्री. यू रमेश पै हांची मिरवणूक.



उद्घाटक श्री. एदुआर्द फालेरो दिवली पेटोवन अधिवेशनाचें उक्तावण करतना.



परिशदेचे आदले अध्यक्ष श्री. उदय भेंब्रे पुस्तक प्रदर्शनाचें उक्तावण करताना. म्हऱ्यांत श्री. माधव कामत आनी श्री. यू रमेश पै.

# अखिल भारतीय कोंकणी साहित्य परिशद्

## अधिवेशनां

**स्थापना आनी पयलें अधिवेशन : कारवार - ८ - ९ जुलै १९३९**

परिशदेचे संस्थापक आनी
पयले येवकार अध्यक्ष : श्री. माधव मंजुनाथ (शणैं) शानभाग
अध्यक्ष : श्री. विश्वनाथ पांडुरंग प्रभु

**दुसरें अधिवेशन : उडुपी – ३१ डिसेंबर १९४०**

येवकार अध्यक्ष : डॉ. टी. एम. ए. पै
अध्यक्ष : श्री. जेरोम साल्डाना

**तिसरें अधिवेशन : मुंबय - ४ - ५ एप्रिल १९४२**

येवकार अध्यक्ष : श्री. वामन रघुनाथ वर्दे वालावलीकार उर्फ शणै गोंयबाब
अध्यक्ष : प्रो. आर्मांदो मिनेझीस

**चौथें अधिवेशन : मुंबय – १९४९**

येवकार अध्यक्ष : रेव्हरंड डॉ. एच्. ओ. मास्कारेन्हास
अध्यक्ष : डॉ. एम्. यु. मास्कारेन्हास
उद्घाटक : स्वामी आनंदाश्रमजी (चित्रापूर मठाचे स्वामी)

**पांचवें अधिवेशन : मुंबय – २३ - २४ फेब्रुवारी १९५२**

येवकार अध्यक्ष : श्री. बाकीबाब बोरकार
अध्यक्ष : डॉ. मारियान साल्दान्य
उद्घाटक : व्यलेरियान कार्डीनल ग्रासिअश, मुंबयचे आर्चबिशप

**सवें अधिवेशन : मुंबय – २७ - २८ एप्रील १९५७**

येवकार अध्यक्ष : श्री. रामचंद्र नारायण नायक
अध्यक्ष : डॉ. सुमित्र मंगेश कत्रे
उद्घाटक : आचार्य काकासाहेब कालेलकर

**सातवें अधिवेशन : कारवार – १९६०**

येवकार अध्यक्ष : अॅड. पी. एस्. कामत
अध्यक्ष : डॉ. बी. एम्. सालेतोरे
उद्घाटक : स्वामी द्वारकानाथ तीर्थ (पर्तगाळ मठाचे स्वामी)

**आठवें अधिवेशन : मडगांव (गोंय) - २६ मे १९६२**

येवकार अध्यक्ष : श्री. रवींद्र केळेकार
अध्यक्ष : डॉ. मनोहरराय सरदेसाय
उद्घाटक : श्रीमती व्हायोलेट आल्वा (राज्यसभेच्यो उपाध्यक्ष)

**णववें अधिवेशन : मुंबय - २९ - ३० सप्टेंबर १९६७**

येवकार अध्यक्ष : मोंसियोर आयरीश फेर्नांडीस
अध्यक्ष : श्री. बाकीबाब बोरकार
उद्घाटक : श्री. वसंतराव नाईक (महाराष्ट्राचे मुख्यमंत्री)

**धावें अधिवेशन : पणजी (गोंय) ८ - १० फेब्रु. १९७४**

येवकार अध्यक्ष : श्री. अनंत नरसिंह नायक
अध्यक्ष : श्री. के. के. पै
उद्घाटक : डॉ. सुनितीकुमार चटर्जी (अध्यक्ष, साहित्य अकादमी)

**इकरावें अधिवेशन : मंगळूर - २१ - २२ फेब्रुवारी १९७६**

येवकार अध्यक्ष : श्री. के. के. पै
अध्यक्ष : श्री. चंद्रकांत केणी
उद्घाटक : रामकृष्ण मिशन मंगळूरचे स्वामीजी

**बारावें अधिवेशन : कोचीन - ११ - १२ फेब्रुवारी १९७८**

येवकार अध्यक्ष : डॉ. जे. ए. भट
अध्यक्ष : श्री. रवींद्र केळेकार
उद्घाटक : श्री. ए. के. अॅन्थनी (केरळचे मुख्यमंत्री)

**तेरावें अधिवेशन : मुंबय १२ - १३ एप्रील १९८०**

येवकार अध्यक्ष : श्री. एफ्. जे. मार्तिरीश
अध्यक्ष : श्री. एन. पुरुषोत्तम मल्ल्या
उद्घाटक : श्री. प्रतापसिंग राणे (गोंयचे मुख्यमंत्री)

**चौदावें अधिवेशन** : **पणजी (गोंय) - २७ - २८ फेब्रु. १९८२**

येवकार अध्यक्ष : ॲड्. उदय भेंब्रो
अध्यक्ष : श्री. व्ही. जे. पी. साल्डाना
उद्घाटक : श्री. उमाशंकर जोशी (अध्यक्ष, साहित्य अकादमी)

**पंदरावें अधिवेशन** : **बेंगळूर - ११ - १२ - १३ मे १९८४**

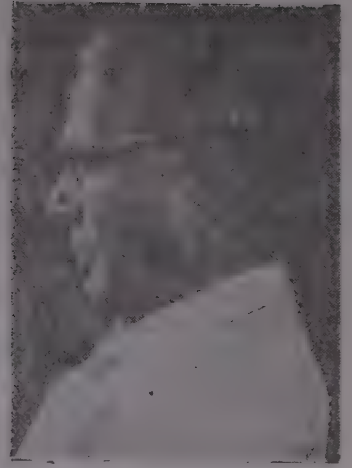
येवकार अध्यक्ष : श्री एम्. यु. हट्टीकुडूर
अध्यक्ष : श्री. नागेश सोंदे
उद्घाटक : श्री. ए. एन. ब्यानर्जी (कर्नाटकचे राज्यपाल)

**सोळावें अधिवेशन** : **कोचीन - २४ - २५ मे १९८६**

येवकार अध्यक्ष : श्री. एन्. पुरुषोत्तम मल्ल्या
अध्यक्ष : ॲड्.. उदय भेंब्रो
उद्घाटक : श्रीमती एम्. कमलम् (केरळाच्यो सहकारमंत्री)

**सतरावें अधिवेशन** : **मणिपाल - ६ - ७ - ८ जाने. १९८९**

येवकार अध्यक्ष : श्री. टि. रमेश यू. पै
अध्यक्ष : श्री. माधव विठ्ठल कामत
उद्घाटक : श्री. एदुआर्द फालेरो (केंद्रीय मंत्री)



**अखिल भारतीय कोंकणी साहित्य परिशदेच्या अठराव्या अधिवेशनाचे सुवातेक जाचें नांव दिलां ते –**

# प्रो. लक्ष्मणराव सरदेसाय

**हांच्या संबंदान –**

प्रो. लक्ष्मणराव श्रीपाद सरदेसाय हांचो जल्म ता. १८ मार्च १९०४ वर्सा, गोंयच्या अंत्रूझ म्हालांतल्या सावय-वेरें गांवांत जालो. लायसियमची सातवी परीक्षा ते पास जाल्ले. १९३० ते ४० ह्या काळांत फोंडेच्या आल्मेद कॉलेजचे ते संचालक आसले. गोवा नॅशनल कॉंग्रेसच्या संस्थापकांमदले ते एक. १८ जून १९४६ दिसा, डॉ. राममनोहर लोहिया हाणी मडगांव सुरू केल्ल्या सत्याग्रहांत ताणी वांटो घेतिल्लो, आनी उपरान्त तांकां एका वर्साखातीर बंदखणीची ख्यास्त फाव जाल्ली. १९४९ वर्सा ते मुंबयत गेले आनी थंय ताणी आकाशवाणीच्या कोंकणीं विभागांत काम केलें. मराठी, कोंकणी आनी पोर्तुगीज भासांतल्यान ताणी बरोवप केलें. १९२२ पासून ' भारत ' ' अ हेराल्दु ' ' हिन्दु ' 'केसरी ' ह्या नेमाळयांनी ताणी लेखन केलें. ' यशवंत ' ' रत्नाकर ' ह्या मासिकांतल्यान कथालेखन केलें. १९३० वर्सा तांचे ' मोहिनी ' कथेक यशवंत मासिकाचे कथा सर्तित पयलें इनाम फाव जालें. तांचो पयलो कथासंग्रह ' कल्पवृक्षाच्या छायेत ' १९३४ वर्सा उजवाडाक आयलो. उपरांत कथा, कादंबरी, कविता, ललित निबंद, व्यक्तिचित्रां अशा वेगवेगळया प्रकारांचे साहित्य ताणी अखंडितपणान रचलें. १९५१ वर्सा तांचे ' मोहर ' कथेक न्यूयॉर्क हेराल्ड ट्रिब्यूनचे कथासर्तित पयलें इनाम फाव जालें आनी ते नामनेचे तेंगशेक पावले. गोंयचे प्रादेशिक कथाकार म्हूण तांका महाराष्ट्रांत नामना मेळ्ळी. गोंयच्या सुटके झुजांत ताणी वांटो घेतलो तेच परी गोंय सुटके उपरांत गोंयात जाल्ल्या ओपिनियन पोलावेळार गोंयचें स्वतंत्र अस्तित्व तिगून उरचें म्हूण वावुरले.

१९८२ वर्सा ' खवरी कांय वर्माच्यो कांय कर्माच्यो ' ह्या तांगेल्या कोंकणी पुस्तकाक केंद्रीय साहित्य अकादेमीचो पुरस्कार फाव जालो.

४ फेब्रुवारी १९८६ दिसा, लक्ष्मणराव ह्या संवसाराक अंतरले.

ताणी रचिल्ल्या साहित्यांत गोंयचे जिणेचें चित्र आसा आनी पावला कणकणी अंत्रूझ म्हालाचे ठशे आसात. आपणाले साहित्य साधनेखातीर ते जायते फावट रामनाथीच्या वाठारांत येवन रावताले.

# NEW LAW TO HELP PROVIDE A CLEANER ENVIRONMENT

The new Motor Vehicles Act and the Central Rules contains Provisions laying down standards for the percentage of Carbon monoxide level and hydrocarbon emission of petrol and diesel vehicles respectively. The maximum carban monoxide level for petrol vehicles is 4.5% at idling speed for two and three wheelers. For four wheeled petrol driven vehicles, the level of carbon monoxide should not exceed 3% by volume and for all diesel vehicles it should not exceed 65 hatridge units during free occeleration.

These vehicles can be checked by instruments such as smoke meters and gas analysers.

The Motor Vehicles Inspector and Sub Inspectors of Police are empowered to direct the drivers to get their vehicles tested.

## PENALTIES FOR VIOLATION

If the Carbon monoxide percentage of your vehicle is above the standard limits, you will attract fine/penalty under the relevant provision of the Motor Vehicles Act 1988 upto Rs. 2000/-

### REMEMBER

Have a regular check of the engine of your motor vehicle & keep it in proper condition

Keep the environment pollution free.

Clean air means a healthy life.



येवकार अध्यक्ष

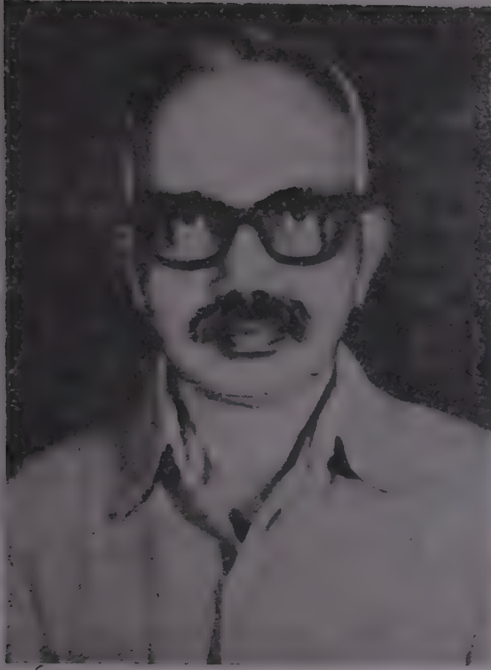
## श्री. माणिकराव गावणेकार

श्री. माणिकराव राम नायक गावणेकार हांचो जल्म ५-४-१९३० वर्सा फोंडें म्हालांतल्या बांदोडे ह्या गांवांत जालो. तांचे मॅट्रीक मेरेन शिक्षण मडगांवां, 'कॅथोलीक एज्युकेशनल इंस्टीटयूट' हांगा जालें, तर एम. ए. मेरेनचें शिक्षण रूईया कॉलेज मुंबय हांगा जालें. हें शिक्षण ताणी नोकरी करतना पुरें केल्लें. मुंबयसावन गोयांत ते १९६२ वर्सा आयले आनी निर्मला इन्स्टीटयूट पणजी हांगा ताणी एम. एड. (M. Ed) मेरेन शिक्षण घेतलें. चार-एक वर्सां बऱ्याच शाळांनी तांणी शिकयलें. आनी १९६८ वर्सां श्रीमती हिरावाय तळावलीकर हायस्कुल ह्या शाळेंत मुख्याध्यापक म्हणून लागले.

शैक्षणिक क्षेत्रांत ते फाटलीं सत्तावीस वर्सां आसात. हिरावाय तळावलीकर स्कुल सुरू जावन चार वर्सां भीतर शाळेची स्वतःची इमारत बांदली. तातूंत तांचो व्हड वांटो आसा. भुरग्यांची च,रूय वटेन उदरगत जावचेखातीर ते सगळ्या मळार वावुरतात. राष्ट्रीय एकता कार्यावळ, शिबिरां घेवप हांतूत ते भुरग्यांक वांटो घेवपाक मुखार काडटात. तेचप्रमाण खासकरून भुरग्यांखातीर तांणी डीझेल मॅकनीक कोर्स आनी शेतीविशय शाळेंत सुरू केल्यात. तांचो खूब शैक्षणीक संस्थाकडेन संबंद आसा. एस. एस. सी. बोर्डाचे वांगडी म्हणून ताणी काम केलां आनी सद्याक ते इंग्लीश विशयाची जी बोर्डाची कमिटी आसा तांतूत काम करतात. राज्य पातळीवेली शैक्षणिक संस्था (S. I. E.) हिच्या सल्लागार मंडळाचेरय ते वांगडी म्हण आसात.

फोंडा शाळा समूह संघटनेचे अध्यक्ष म्हणून ताणी काम केलां. शाळा मेनेजमेंट संस्थाचे चिटणिस म्हणून तांणी काम केला. फोंडा भारत बालवीर संघटनेचे ते अध्यक्ष आनी गोंयां भारत बालवीर संघटनेचे उपाध्यक्ष आसात. सद्याक ते गोवा मुख्याध्यापक संघटनेचे अध्यक्ष आसात.

तेचप्रमाण रेडीओचेर नित्यनेमांन शैक्षणिक कार्यावळीनी ते वांटो घेतात. तांणी भुरग्यांक सोपी जावची म्हणून पांचवे आनी सव्वे खातीर इतिहासाची पुस्तकां बरयल्यांत. "कोंकणी विश्वकोश" खातीर ताणी कांय विशयांचेर बरवप केलां. उत्कृश्ट कामां खातीर तांका बरो शिक्षक म्हणून १९८६ - ८७ वर्साचो राज्य पुरस्कार फाव जाला. तशेंच गोवा भारत बालवीर संघटनेनूय तांचो वऱ्या कार्याखातीर गौरव केला. तर १९८९ वर्साचो बरो शिक्षक म्हणून राष्ट्रीय पुरस्कार तांका ५ सप्टेंबर १९९० दिसा भारताच्या राष्ट्रपतींचे हस्तुकीं लाबला.



अध्यक्ष

# प्रो. आर. के. राव

प्रोफेसर रघुनाथ कृष्ण राव हांचो जल्म कोचीनांत ता. ४ जुलय १९१४ वर्सा जालो. मुखेचे शिक्षण त्रिपुनीथुरा हांगासर जालें. उपरांत ताणी एर्नाकुमांतल्या रॉयल कॉलेज ऑफ होमिओपाथिक फिजिसिएन्स हांगा वैजकी अभ्यास करून एल. आर. सी. एच. पी. ही पदवी मेळयली.

हिंदी भाशेची मद्रास विद्यापीठाची "विद्वान" ही पदवी ताणी मेळयली. थंयच हिंदीत एम. ए. ची पदवी घेतली. १९३७ ते ४० ह्या काळांत ते हिंदी प्रचारक म्हुण वावुरले. उपरांत हिंदी शिक्षक, प्राध्यापक, भाशा विभागाचे मुखेली, म्हण ताणी केलें.

मद्रास विद्यापिठाच्या ॲकाडेमीक कॉन्सीलाचे वांगडी, मद्रास आनी केरळ विद्यापिठाचे परीक्षा मंडळाचे वांगडी आनी अध्यक्ष, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा – मद्रासच्याय परीक्षा मंडळाचे वांगडी आनी अध्यक्ष, केरळ आनी कोचीन विद्यापिठाच्या अभ्यास मंडळाचे वांगडी अशीं शिक्षणीक संस्थानी मानाचीं पदां ताणी भुशयल्यांत. सद्याक कोचीनच्या केरळ हिंदी साहित्य मंडळाचे उपाध्यक्ष आसात.

१९७१ वर्सा ताणी कोचीनांत "कोंकणी भाशा इन्स्टीट्यूट" घडयलें. सद्याक त्या इन्स्टीटयूटाचे ते संचालक आसात. पांच वर्साचे मुदतीखातीर ते केंद्रीय साहित्य अकादेमीच्या सल्लागार मंडळाचेर आसले. "केरळ कोंकणी अकादेमी" चे ते संस्थापक अध्यक्ष.

१९३७ वर्सा महात्मा गांधीन सुरू केल्ल्या स्वतंत्राये झुजान ताणी वांटो घेतिल्लो. १९४३ वर्सा तांका स म्हयन्याची बंदखणीची स्यास्त जाल्ली.

स्वतंत्रताये झुजावेळार श्री. एन. व्ही. कृष्णा वारीयर हांच्या संपादनाखाला उजवाडाक येवपी "स्वतंत्र भारत" ह्या नेमाळयाचे ते संयुक्त संपदाक आशिल्ले. ताणी मळयाळम, हिंदी, इंग्लीश आनी कोंकणी नेमाळयांनी संशोधनात्मक वैचारिक लेख बरयल्यात. मळयाळम, हिंदी आनी इंग्लीश भाशेंतल्यान "कोंकणी स्वयंशिक्षक", "कोंकणी व्याकरण" भुरग्यांखातीर "तुळशीदास" हे चरित्र ताणी बरयलां. हालींच ताणी मळयाळम लिपींतलें ताडपत्राचेर आशिल्लें "गोइडें रामायण" हाचेर संशोधन करून तें देवनागरी लिपींत उजवडायलां. ताणी साहित्य अकादेमी खातीर पुस्तकां कोंकणीन अणकारल्यांत.

कोंकणी बरोबर ताणी मळयाळम, हिंदी, आनी इंग्लीश ह्यावूय भासांनी साहित्यिक वावर केला. हिंदी अभ्यासक्रमाखातीर पुस्तकांचे संपादन केला. सद्याक ते कोंकणीतल्या लोकवेदाचे संशोधन करपाच्या वावरांत आसात.

प्रो. रावानी सामाजिक, सांस्कृतिक आनी साहित्यिक मळार केल्लो वावर मतिन घेवन तांचे विगड विगड संस्थानी भौमान केल्ले आसात. मंगळुरात १९७६ वर्सा जाल्ले अखिल भारतीय कोंकणी साहित्य परिशदेच्या अधिवेशनांत तांचो सत्कार जाल्लो. ताम्रपत्र दिवन भारत सरकारान तांचो सुटके झुजारी म्हण गौरव केला.

# येवकार अध्यक्ष
# श्री. माणिकराव गावणेकार
हांगेलें
## उलोवप

---

भोमानेस्त अध्यक्ष, भयणीनो आनी भावांनो,

समान नटिल्ल्या आनी थटिल्ल्या अंत्रुज म्हालांत आनी श्री रामनाथाच्या पांयाकडेन, प्रो. लक्ष्मणराव सरदेसाय नगरात, अखिल भारतीय कोंकणी साहित्य परिशदेच्या १८ व्या अधिवेशनाक महाराष्ट्र, कर्नाटक आनी केरळ ह्या राज्यातल्यान आयिल्ल्या साहित्यिकांक आनी साहित्यमोगींक येवकार समितीचो, काळजांतल्या उबेंभरीत येवकार.

ही परिशद, गोंय घटक राज्य जातकूच आनी कोंकणी राजभास जातकूच पयलेच फावट गोंयांत भरता देखून चड मोगाळ येवकार.

हो येवकार म्हणजे तरनाटयांचो, कोंकणीच्या तळमळीचो ओंकार. हो ओंकार म्हणजे कोंकणीचें इतल्या वर्सांचें जैत जावन आसा. कोंकणीच्या जैताची घुडी आज ताठ मानेन उबी आसा. आयज ती राजभास जाल्या. हो जैताचो ओंकार सगळयांक पातळ्ळा. जे हात कोंकणीचे पांय ओडपाक गुंतिल्ले तेच हात आतां आपसूक कोंकणीक नमस्कार करपाक जोडल्यात. हो ओंकार फुडें वतना जे आमचे बराबर येना तांका माडून फुडें वचचेना तर येता जाल्यार तांका बराबर घेवन वतले ना जाल्यार तांकां कडेक काडून फुडें वतले.

परिशदेचें धा वें आनी चौदा वें अधिवेशन गोंयांतच जालें. धा व्या अधिवेशनाचें उक्तावण साहित्य अकादमीचे तेन्नाचे अध्यक्ष स. डॉ. सुनितीकुमार चटर्जी हाणी केल्लें, तर चौदाव्या अधिवेशनाचें उक्तावण साहित्य अकादमीचे तेन्नाचे अध्यक्ष प्रो. उमाशंकर जोशीच्या हातान करपाचें भाग्य लाभिल्लें.

कोंकणी भास गोयांत राजभास जाल्या पूण तीका फावो तो जागो शासनांत दिवंना. तिका मानाचो पाट कायदयान दिला पूण प्रशासनांत तिका चालीक लांवक ना. इतलेच न्हय प्राथमीक स्तराचेर लेगीत तिका मान दिवचे बदला एके परके भाशेक तो मान मेळचो म्हण हांगाचे कांय जाण चळवळ करपाक फुडें सरतात. ही खंतीची आनी लजेची गजाल. सरकारान असल्या गजालींक थारो तर दिवंक जायनाच पूण लोकांनीय दिवंक जायना. आयज बरेचे गोंयकार कोंकणीक प्राथमीक स्तराचेर लेगीत स्थान दिवपाक लजतात, भिडेतात, तेय आपल्या स्वार्थाखातीर. ही सामकी वायट गजाल. आनी लजेची गजाल म्हळयार जांण्टयांक जी गुलामपणाची सवंय जाल्यात ती आमी भुरग्यांचेर थापतात. भुरग्यांक आमी चिडिुतात, तांका आमी गिड्डे करतात. तांची शिक्षणीक वाढ आमी मांटवी करतात. हांका जागोवचे कशे आनी हो वावर आनीक नेटान, आनी फाव ते दिकेन जावचे खातीर आमी किते उपाय करूं येतात काय किदें हाजेर ह्या

अधिवेशनांत विचार जातलो अशें हांव मानतां. गोंयांत कोंकणी अकादमीची स्थापणूक जाल्या पूण तिका जाय तशी उडपाक मेळना. तिची पांखां बरीच कातरल्यांत. तिका नेटान वावर करपाक मेळना. सरकारान तिका फावो तो पालोव दिवंक जाय.

पणजी दूरदर्शनय सुरू जालां ही एक खोशयेची गजाल. पूण अर्दवरान कोंकणीक आपली कला दाखोवंक मेळना. सगळ्या वाटांनी ती फुलूंक जाय तर वेळाचीय वाढ जावंक जाय.

कोंकणीचे उदरगती खातीर तिका उपाट सरकारी पालोव मेळूंक जाय. ती सरकारी शासनाची दिसपट्टी भास जावंक जाय. सरकारी नोकरेक आनी आपवावुरपी संस्थानी नोकरेक कोंकणी सामकी गरजेची करूंक जाय. कोंकणी राजभास जावन लेगीत सरकार गरज तितलो कोंकणी खातीर वावुरना. सरकाराची न्हीद सदांच कुंभकर्णाची आसता. सरकार चड करून कदेलाचेरूच न्हिदता. कोंकणीक फाट करून तांकां जाग हाडपाची गरज आसा. परिशदेन हाचेर विचार करूंक जाता.

## सामाजिक मळार

सामाजिक मळार, अखिल भारतीय कोंकणी परिशदेंच्यो ह्यो बसको आनीं अखिल भारतीय आवांठाची कोंकणी लेखक सम्मेलनां हांका लागून आपल्या मायभाशेचे उदरगती विशिंची जाणविकाय कोंकणीं लोकामदी वाडीक लागल्या. चार राज्यांनी आनी पेंस पेंस शिंपडिल्लो कोंकणी भाशीक समाज एककडेन येता, विचार करता, एकामेकाक समजून घेता ही खोशेयची गजाल. पूण ही विचारमंथनाची शीम हुपून आमी फुडें वचपाची सामकी गरज उप्रासल्या.

आतांमेरे १७ बसका जाल्यो. कोंकणी भास ही वज्राभाशेन. कोंकणी भास हें एक मोलादीक वज्र. पूण वज्र हें वज्र जावपाक ताका तांसां मारची पडटात. समाजाक ताचो उपेग जावंक जाय. फकत आमचेकडेन वज्र आसा म्हणून ओगी बसूर उपकरचे ना. हे पिळगेन तरी नेटान वावर करचो पडटलो आनी करून घेवचो पडटलो. कोंकणीची सगळ्या आंगानी उदरगत जांवक जाय हे विशीं वाद ना.

कोंकणी भाशेचे सगळ्या आंगांनी संशोधन जावंक जाय. भाशेचो इतिहास, शब्दांची उत्पत्ती, शब्दांच्या अर्थाचो विकास, उच्चार ह्या वावराक परिशदेन दिका दाखोवपाक जाय. फकत विचार मंथन करप, थाराव करप आनी दोन वर्सां ओगी बसप अशें घडूंक फावना. सद्याक कोंकणीत मलयालम, कन्नड, रोमीं लिपीत, पुस्तां बरयतात. हांतुतली बरी बरी पुस्तकां देवनागरी लिपयेंत हाडूंक जाय. आनीक एक खुशालकायेची गजाल म्हळ्यार देवनागरी लिपीत एक दिसाळें सुरू जालां. ताका आमी सगळे तरेचो आदार करपाक जाय.

## साहित्यिक मळार

साहित्यिक मळार आमी पावलां न्हय तर व्हडलीं धेंपा मारूंक लागल्यात म्हणून बरोवप्यांची तूस्त करूंक फावो. पूण आमी एकेच दिकेन वावर करतात अशें म्हाका दिसता. काव्यांत आमचो हात धरणारो कोण ना. कथेंत आमी फाटीं ना. नाटकांक बरो चंवर आयला. कादंबरीच्या मळार आमी ताकद दाखयल्या. पूण हेर विशयाकडेन आमची आडनदर जाल्या. इतिहास-इतिहासाचीं पुस्तकां आमचेकडेन जाय तितलीं ना. विज्ञानाची पुस्तकां आमचेकडेन सापउणी. वैचारीक पुस्तकांची तुटपाण आसा. सर्वसादारण शिक्षणातल्या विशयाचेर पुस्तकां अजून आमचेकडेन ना. संवसारांत जें बऱ्यांत बरें वाङमय आसा तें कोंकणीत हाडपाची एक येवजण तयार करपाची गरज आसा. आज गिन्यान वाढत वता. जगाबराबर रावतले जाल्यार आमी फकत थाराव करून उपेग ना. वावुरपाक जाय. तशेंच परिशदेन आनीक एक वावर आंगार घेव येता. हो वावर म्हळ्यार जीं पुस्तकां उजवाडा येतात तीं लोकांमेरेन पावपाचो वावर.

## शिक्षणिक मळार

शिक्षणिक मळावयली उदरगत म्हत्वाची जावन आसा. कोंकणीं माध्यमातल्यान शिक्षण गोंय विश्वविद्यालया मेरेन पावलां. एम. ए. क आयज कोंकणी चार पेपर घेवंक येता. बाकीच्या भासांनी जाता तशें एम. ए. च्या अभ्यासक्रमांत ते आठ कित्याक जाव नये ? ते आठ जावंकच जाय. बि. ए. च्या अभ्यासक्रमांत जशी बुन्याद जावंक जाय तशी

जावंक ना. आयज एस. एस. सी. क खूब भुरगे कोंकणी विशय घेतात. आयज ५ वी ते १० वी मेरेन एक लाखांवयर भुरगे माध्यमीक, उच्च माध्यमीक शाळांनी शिकतात पूण खंतीची गजाल म्हळ्यार प्राथमीक शाळांनी सामकेच कमी भुरगे कोंकणी शिकतात. माध्यमीक शाळांनी लेगीत जे कोंकणी शिकतात ते नदरेक पळोवंक गेल्यार खूबच कमी. आयज एस. एस. सी. क सुमार १६ हजार भुरगे शिकतात. तांतुतलो सुमार हजार भुरगे कोंकणी विशय घेवन बसतात. हातूंत खूबच वाढ जावंक जाय. ती कशी जातली हाचो आमी विचार करूंक जाय. हो वावर जरी समाधान दिता तरी शिक्षणीक मळार आमी खूब फाटीं आसात. शिक्षणीक पांवड्यावयलीं मोलादीक शिक्षणीक पुस्तकां आमचेकडे नात. कोंकणी सनद कोर्स बि. ए पांवड्यावयलो जातलो जाल्यार आमकां शिक्षणिक शास्त्रावयलीं पुस्तकां लागतलीं. तीं आमचेकडे नात. ह्या खातीर एक येवजण आमी करूंक जाय.

खोसयेची गजाल म्हळ्यार विश्वविद्यालयांत कोंकणी विश्वकोशाचें काम चल्ला. पूण हे दोन खंडांतच पुराय जावंक जाय अशें बंदन आसा खंय! विश्वकोश म्हळ्यार १५-२० खंड तरी जावंक जाय आनी कोंकणी विश्वकोश फकत दोनच खंड? चड कित्याक मेळना? कोण आडमेळीं हाडटात? हाचें संबंदान आमी जागे जातले काय ना? गोंयचो सांस्कृतीक कोश कित्याक आसचो न्हय? गोंयाक व्हडलें दायज आसा. व्हडलो इतिहास आसा हो सगळो इतिहास कोंकणींत कित्याक येना? आयज विश्वविद्यालयांत डॉक्टरेट कोंकणींत जावंक जाय. आमी खंय तरी कमी पडटात.

कोंकणी अकादमींत आयज बरोच वावर चल्ला. तुस्त करपासारको वावर चल्ला. शब्दकोश, व्याकरण, लोकवेद हाचेर बरो वावर चल्ला. इतल्यान भागना. आयज कोंकणी-कन्नड, कन्नड-कोंकणी, कोंकणी-मलयालम, कोंकणी-मराठी, मराठी-कोंकणी इतले शब्दकोश जावपाची खूब गरज. त्या त्या सरकारांचो पालव घेवन हो वावर हातांत घेवंक जाय. ह्या संबंदान परिशदेन फुडाकार घेंव येता अशें म्हाका दिसता.

## आमची भास

आमची भास आमकां जाय. तिची वाड जाल्ली आमकां जाय. पूण ती भास वाडोवंक आपुण सोडून दुसऱ्यांनी वावुरचें म्हळ्यार कशें जातले? दुसरो हें करीना ते करीना अशें म्हणचे परस 'हांव कोंकणी खातीर कितें करता?' असो स्वताकच प्रश्न विचारचो. आपलें पावल मागीर योग्य मार्गार पडटलें. कोंकणी ही पोटाची भास न्हय देखून आमी इंग्लीश शिकतात अशें म्हणप म्हळ्यार कोंकणीचेर हो व्हडलो अन्याय. हो अधर्म सरकाराक सोसता न्हय?

प्राथमीक स्तरार लेगीत इंग्लीश शिकून आमच्या समाजासावन आमी भुरग्यांक पैस व्हरतात. आयज पयले वर्गाची ल्हान ल्हान भुरगीं Yes man, come man अशें उलयतात तेन्ना त्या भुरग्यांची काकुयट दिसता. ही भुरगीं स्वताक कोणतरी समजतात! आपले मातयेसावन पैस - मुळां कातल्लेली 'बोन्साय झाडां जावन पडटात. तांका खावचें जेवचें हाचे बगर कांयच नाका जाता.

गटे हो व्हड बरोवपी, असल्या मनशाक Billiards चेंडू म्हणटात. ते एकठांय येतात ते फकत वेगळे जावपाक.

इंग्लीश शिकूक नाका अशें कोणच म्हणीना. ती जितली जाय तितली शिकचीच. पूण कमराचें सोडून माथ्याक बांदप ही रीत आमी आपणावंक जायना.

बऱ्याच वेळार आमकां आयकूंक येता, भुरग्यांची आवयभास थारावपाचो अधिकार पालकांचो. हो समज आसा तो सामको चुकीचो.

ज्या देशांतले लोक फकत दुसऱ्यांचें अनुकरण करतात, फकत नक्कल करतात, ते व्हड जावंक पावनांत. ही गुलामगिरीची लक्षणां. आमचें दायज आमी विसरप हाचे सारकी लजेची आनी खंतीची गजाल दुसरी ना.

खरें म्हळ्यार त्या त्या राज्याची देशाची भास थरिल्ली आसता. ती कायद्यान थारायनात. ती आसताच. हाचेर उपाय कितें? हाचेर एक व्हड चळवळ जावपाची गरज आसा. मुळावें शिकप कोंकणीतल्यानूच जावंक जाय. पूण हें घडना. हें घडचें न्हय म्हूण समाजाभितर जातीय धोशी घालपाचो यत्न जायत आसा. मुंबय, मंगळूर, कर्नाटकांत कोंकणी भाशीक लोक कोंकणींतल्यान मुळावें शिक्षण कित्याक घेनात? अजून जागृताय जावना.

आमची कोंकणी भास जर वाडटली तीं जिवेरूय उरूंक जाय आनी शिकूंक जाय. हाका एकच उपाय म्हळ्यार ती नोकरेक गरजेची करूंक जाय. ते खातीर सरकाराचेर जाता तितलें चेपण हाडूंक जाय. हाचेखातीर एक चळवळ उबारूंक जाय. सरकाराक जाग हाडटलो जाल्यार दुसरो उपाय ना.

हांगा आयिल्ले सगळे प्रतिनिधी एकठांय बसून विचार करतले अशी हांव आस्त बाळगिता. येवकार समितीन मायेमोगान सगळ्यांची व्यवस्था केल्या. कितेंय चड उणें जाल्यार रागार जांव नये. परत एकदां तुमकां येवकार दिवन तुमी आमका बरो सांगात दिल्ले अशें आमी आंवडेतात.

☐

Tourism cum Hotel Industry plays a vital role in the State's economy and contributes substantially towards revival of art, culture and handicrafts.

Tourism fosters national integration and international understanding leading to world peace.

Tourism is one single industry which provides the largest number of jobs.

Tourism is an activity which has the largest multiplier effect with respect to the circulation of maney,

It is our endeavour to develop tourism in Goa or a sound, firm footing and well planned for the benefit of all peoples and prosperity of the local populace.

*Issued by :*

## Directorate Of Tourism,

Government of Goa,
Tourist Home, Pato,
Panaji, Goa 403 001.
Tel : 5583, 4757
Grams : GOAYATRA

# अध्यक्ष

# प्रो. आर. के. राव

हांगेलें

## उलोवप

---

अखिल भारतीय कोंकणी साहित्य परिशदेच्या हांगा जमिल्या प्रतिनिधीनो, येवकार समितीच्या वांगडयांनो, वावुरपी समितीच्या मानेस्तानों-भावांनो आनी भयण्यांनो –

ह्या अखिल भारतीय कोंकणी साहित्य परिशदेच्या म्हान सुवाळ्याचो म्हाका अध्यक्ष म्हूण वेंचून काडिल्ल्यान म्हज्या मनांत भोव संतोष जाता. जांणी म्हाका हो अपूर्व भोवमान फावो केला त्या सगळयांक हांव काळजाथावन नम्रतायेन अभिवादन करतां आनी ह्या अध्यक्ष पदार आदीं बशिल्ल्या सगळयांक स्मरून ह्या पदाची व्हडविकाय सांबाळपाचें हांव उतर दितां.

अखिल भारतीय कोंकणी साहित्य परिशदेचें हें अठरावें अधिवेशन ह्या पुण्यभूंय गोमंनकांत जाता. सह्याद्री पर्वताच्या पांयाकडेन आशिल्ल्या ह्या सोबीत वाठाराची पावलां अरबी सागरांतली दर्या ल्हारां सदांकाळ धुयत आसात ह्या भूंयर अनादी काला साकून रावपी आर्य द्रावीड आनी निशादांनी हांगा एक नवो वाठार घडयलो. देव-धर्माचे नेम निश्ठेन पाळत आशिल्ल्या ह्या लोकांनी मंगेश शांतादुर्गा, विष्णु आदी देव-देवतांची देवळां उबीं केलीं. म्हान रूशी-मुनींनी हांगा जल्म घेतिल्ल्यान ही भूंय पुण्यभूंय जाल्या. ह्या भुंयेर जायत्या राजांनी व्हड पराक्रम गाजयला. अशा ह्या म्हान भुंयेर उतरां कणकणी नाद-माधुर्यान भरिल्ली सत्वयुक्त, समृद्ध भास कोंकणी जल्माक आयली.

हांगा एकठांय जमिल्ल्या म्हज्या मानादीक इश्टांक ह्या भूंयेचो इतिहास आनी थळावी भास कोंकणी विशींची व्हडवीक चार उतरांत हांव सांगतां.

गोंयात क्रिस्ती शक दुसऱ्या शेंकडयांत राज्य करपी गुप्त काळांत उबो केल्लो हरवेळचो शीलालेख कोंकणी भास त्या काळांत वरयताले म्हळ्ळें दाखोवन दिता. गोंयांत आनी गोंयकारांत कोंकणी संस्कृतायेचीं पाळां-मुळां त्या पुर्विल्ल्या काळांतय रुजिल्लीं म्हणपाचो तो पुरावो जावन

आसा. त्या उपरांत ह्या वाठाराचें भवितव्य घडयिल्ल्या भोवतेक राजांनी कोंकणी संस्कृताय आनी साहित्याचे उदरगती खातीर हातभार लायलोच ना. इतलेंच न्हय तर तांच्या करणेक लागून कोंकणीक वायट दीसच आयले.

गोंयांत राज्य केल्ल्या कदंब आनी सोंदे राजांनी कोंकणी भाशेच्या स्वभाविक हक्काचेर आडमेळें हाडलें आनी कन्नड राजदरबाराची भास केली. अलाउदीनाल्या आक्रमणाक लागून कोंकणीच्या मूळपीठांतच तिजेर आकांताचो प्रसंग आयलो. बहामनी आनी विजापूर, सुलतानांनी तिका सदांच चेपणा खाला दवरले. पोर्तुगीजांनी तिका कुस्कुटायलें, हिणसायलें आनी घुसमटायलें, भारतीय साहित्य मंदीरांतल्यान तिका नानपश्चात करपाचे यत्न सतत जायत आयले. पूण तिज्या पुतांनी ह्या सगळ्या आडमेळ्या आड सातत्यान वावरून केल्ल्या म्हान त्यागाक लागून निमाणे ती जैतिवंत जाली.

पोर्तुगीज काळांत जाल्या धार्मिक छळाक लागून जायत्या कोंकणी लोकांचेर आपणालें मूळपीठ गोंय सोडून शेजारच्या महाराष्ट्र, कर्नाटक आनी केरळ राज्यांत धांवन वचून रावपाचो प्रसंग आयलो. तरी पूण तांणी आपणाली भास आनी संस्कृताय सोडली ना. आपणालें सांस्कृतीक आनी भाशीक दायज आयज मेरेन व्हडा कश्टान राखून दवरलें.

त्या म्हान कोंकणी परंपरेचे आमीं वंशज आज हांगा अखिल भारतीय कोंकणी साहित्य परिशदेच्या पाख्यातळा एकठांय जमिल्ले आसात.

कारवारांत पयली कोंकणी परिशद जाल्या उपरांत एकावन्न संस्मरणीय वर्सां सोंपल्यांत ह्या काळांत कोंकणी भास आनी संस्कृतायेंत नवचैतन्य निर्माण करून पुनरूज्जीवन घडोवन हाडपाक जाय आनी समृद्ध कोंकणी साहित्य निर्मणी जावपाक जाय म्हळ्ळ्या भावनेन सतत वाड जायत आयिल्ली दिसून येता. कोंकणीचो म्हान फुडार होलमल्ले सर्गेस्त श्री. माधव मंजुनाथ शानभाग हांणी सुरू केल्ल्या ऐतिहासीक कार्याक दिसांदीस चड आनी चड वेग मेळत आसा. आज ताका सामूहीक चळवळेचे रूप आयला. ती चळवळ अख्ख्या कोंकणी समाजा मेरेन पावल्या आनी कोंकणीचे जे-जे कितें आसा ते सगळे उखलून धरत आयल्या. देखूनच आज ह्या जनां सामकार उलयतना म्हजे काळीज अभिमानान भरून येता.

अखिल भारतीय कोंकणी साहित्य परिशदेचे मुखेल ध्येय-धोरण कितें, ते वेव्हारांत हाडपाचे नदरेन परिशदेन आतां मेरेन कितें केलां आनी तातूंन परिशदेक कितलें यश मेळ्ळां, हाजो नियाळ आज ह्या दिसा घेवप गरजेचें आसा अशें म्हाका दिसता.

कारवारांत सर्गेस्त श्री. माधव मंजुनाथ शानभाग हांच्या मुखेलपणा खाला भरिल्ल्या कोंकणी परिशदेन १) कोंकणी उलोवपी समाजात सांस्कृतीक एकवट घडोवप २) विंगड-विंगड शैलीन कोंकणी उलोवपी लोकांक एकठांय हाडून प्रमाण कोंकणी भास घडोवप आनी ३) कोंकणी भास आनी साहित्याचे उदरगती खातीर देवनागरीचो उपयोग करपाक प्रोत्साहन दिवप ही उद्देशां नदरे सामकार दवरून घेतिल्ली,

## सांस्कृतीक एकवट

कोंकणी उलोवपी लोक गोंय, कर्नाटक, केरळ आनी महाराष्ट्र राज्यांत रावतात. कर्नाटक, केरळ आनी महाराष्ट्रांतल्या थळावे लोकांची भास आनी संस्कृताय विंगड-विंगड आसा. त्या-त्या वाठारांनी रावपी कोंकणी लोकांचेर त्या-त्या वाठारांतल्या भाशेचो

आनी संस्कृतायेचो परिणाम जाल्लो आसा. ह्या सगळ्या कोंकणी लोकांच्या भाशेचो आनी संस्कृतायेचो मेळ, गोंयच्या भाशे वांगडा आनी संस्कृताये वांगडा सांदून समन्वयकारक कोंकणी संस्कृताय घडोवपाक फाव तशें वातावरण तयार करपाची गरज आसा. ह्या राज्यांत आनी गोंयांत जाल्ल्या अखिल भारतीय कोंकणी साहित्य परिशदांनी आनी लेखक संमेलनांनी हें धेय सादपाचे नदरेन जायतो वावर केल्लो आसा. तरी पूण आमी करपाचे अजून जायतें उल्लां म्हूण म्हाका दिसता. कोंकणी भास, साहित्य आनी संस्कृतायेच्या उदरगती खातीर जायत्यो कार्यावळी आंखल्यात आनी वेव्हारांतय हाडल्यांत. आमच्यांत आशिल्ले धर्मिक, भौगोलीक आनी भाशीक वेगळेचार ना करपाचे नदरेन ह्यो कार्यावळी अत्यंत महत्वाच्यो आसात.

देखीक आमी नाटकांचो विचार करूंया. मुंबय, मंगळूर, कोचीन, बेंगळूर, गोंय आदीं वाठारांत कोंकणी नाटकां जायत आसतात. पूण कोंकणी समाजाचो सांस्कृतीक एकवट घडपाचे नदरेन तांचो फाव तितलो लाव जाल्लो दिसून येना. आमचे संस्कृतायेचें दर्शन घडोवपी कांय नाटकां आमी बरोवपाक जाय आनी मुंबय साकून कोचीन मेरेन पातळिल्ल्या सगळ्या कोंकणी लोकां सामकार तांचे प्रयोग करपाक जाय अशें म्हाका दिसता. हाका जायतीं आडमेळीं येवपाक शकतात. अर्थिक आनी वेवस्थापकाचे बाबतींत अडचण्यो आसतल्यो तरी पूण अखिल भारतीय कोंकणी साहित्य परिशदेन हें कार्य हातांत घेवपाक जाय अशें म्हाका दिसता.

आमी मुंबयचें उदाहरण घेवंया. विगड विगड वाठारातले कोंकणी लोक थंय रावतात. देखून कोंकणी संस्कृतायेचो एकवट घडोवपाक थंय जायतो वाव आसा. थंय योग्य वातावरण आशिल्लें दिसून येता अशें आसतनाय थंय कांय आडमेळीं आसात. तीं ना करपाक अखिल भारतीय कोंकणी साहित्य परिशदेन पावलां घालूंक जाय. तातूंत परिशदेक यश मेळत तर कोंकणी समाजांत एकवटाची भावना रुजोवपाक साध्य जातलें म्हूण म्हाका भरवंसो आसा.

कोंकणी समाजांतली दर एक जात एकमेकां कडेत दुबावाचे नदरेन पळयता. कोंकणी ही एका जमातीची वा जातीचीच भास न्हय म्हूण परिशदेन जाहीर करपाक जाय. गोंय मूळ पीठ अशिल्लया सगळ्या कोंकणी लोकांची ती भास जावन आसा कोंकणी आवयभास आशिल्ल्या समाजाचो आपूण अभिन्न भाग म्हूण दर एका कोंकणी जातीन समजून घेवपाक जाय.

आमच्या भाशेविशीं स्वाभिमान आनी गौरवपूर्ण भावना निर्माण करपाक आमच्या पूर्वजांनी यश मेळयिल्लें आसा. तांणी अविश्रांत केल्ल्या श्रमाक लागून तरनाटे पीळगेंत तांची आवयभास कोंकणीविशीं मोग आनी अभिमान निर्माण जाल्लो आसा. ताजे खातीर जायत्यो थळाव्यो संस्था वावुरत आसात.

## कोंकणीचें प्रमाणीकरण

कोंकणी सगळे कडेन एका तरेची ना, विगड - विगड वाठारांत कोंकणीच्यो विगड विगड शैल्यो आसात, ज्यो एकमेकांक समजून घेवपाक जातात पूण कांय वेळा कांय शैलींतलीं कांय उतरावळ सगळ्यांक समजना अशें कोंकणी विशीं म्हणटात. पोर्तुगीजांनी १५१० सालांत गोंयचेर केल्ल्या आक्रमणाक लागून गोंय वाठाराचे विघटण जालें आनी कोंकणी उलोवपी लोकांचेर कर्नाटक आनी उपरांत केरळांत निराश्रीत म्हूण वचून हेर भासांच्या पाख्यातळा रावपाचो दुर्देवी प्रसंग आयलो. ताका लागून सगळ्या कोंकणी लोकांचो एकवट आनी समन्वय सादपी सर्वमान्य कोंकणी साहित्यिक

भास घडूंक शकली ना. आमच्या कोंकणी भाशेतल्यो स तरा डॉ. सुमित्र मंगेश कत्रे हांणी दाखोवन दिल्यात आनी त्यो सगळयो एकाच भाशेच्यो शैल्यो म्हूणय आपणालें मत उगतायलात. त्यो सगळचो शैल्यो १००० साला आदल्या पोन्न्या कोंकणी रूपां कडेन सांदिल्ल्यो दिसून येतात. डॉ. जुझे पेरैर हांणी साहित्यिक भास म्हूण कोंकणीची उदरगतीविशीं बरयिल्ल्या पुस्तकांत कोंकणी साहित्यिक भाशेचो इतिहास दिला. क्रिस्तीशक सोळावे शेंकडचा मेरेन कोंकणी साहित्याची अखंड परंपरा चलत आयिल्ली अशें तांचे मत आसा. सोळाव्या शेंकडचाच्या पूर्वार्धात कृष्णदास शामा हांणी रामायण आनी महाभारत, तशेंच "अश्वमेधु", "कृष्णचरित' आनी "रघुनाथ वंशाची कथा" सारख्यो पुराणकथा बरयिल्ल्यो म्हूण तांतल्यान कळून येता. भारतीय भासांचो एकचार सादपी रामायण, महाभारत आनी भागवत पुराण कोंकणीत त्या काळात बरयल्यात म्हळ्ळी गजाल गोमंतकाची कोंकणी भाशीक आनी साहित्यिकपरंपरेची गवाय दिता. धर्म प्रचारकांनी पूण गोंयांत कोंकणीचेर हावळ आयिल्ले वेळारच साश्टी, कारवारी, बार्देशी, मंगळूरी आनी अंत्रूजी शैलींत धर्म-साहित्य बरोवपाची सुरवात किरिस्तांव धर्म प्रसारकांनी केल्ल्यान आनी उपरांत अठरावे शेंकडयाचे सुरवाती साकून त्या शैलींत साहित्य निर्मिती जावपाक लागिल्ल्यान कोंकणीचे प्रमाणीत साहित्यिक रुप सावकासायेन विघटीत जायत गेले. हाका लागून कोंकणी भाशेचे विघटण जालें अशें न्हय तर दर एका शैलीत कांय खाशेले साहित्य प्रकार निर्माण जावपाक लागले.

कोंकणीतले हे सगळे प्रकार सांबाळून सगळचांक मान्य जावपी प्रमाण साहित्य शैली कशी घडोवप? ह्या प्रस्नाचेर अखिल भारतीय कोंकणी साहित्य परिशद इतलीं वर्सां विचार करत आयल्या. आज गोंयांतल्या शाळां-कॉलेजींत कोंकणी शिकयत आसात. व्याकरण, शब्दकोश आनी पाठय-पुस्तकां तयार करून उजवाडायत आसात. अशें आसलें तरी कोंकणी भाशेचें प्रमाणीकरण घडोवन हाडपाक कोंकणी परिशदेन ताकतीक करपाक जायना अशें म्हाका दिसता. हो प्रश्न सोडयतना आमी जतनायेन पावलां उखलपाक जाय आनी बुदवंतकायेचे धोरण आपणावंक जाय.

प्रमाणीकरण दोन तरेन करपाक जाता अशें म्हाका दिसता. कोंकणीतल्या पंडितांनी आनी बुदवंतांनी भाशेचें प्रमाणीकरण घडोवप हो पयलो प्रकार. सामान्य भोवसांनी ते घडोवपचो दुसरो प्रकार अशें सामान्यतायेन म्हणूंक येता. भोवसांनी प्रमाणीकर घडोवपाची प्रक्रिया सैमीक आनी स्थीर आसता. पूण पंडितांनी एकमेकां कडेन भासाभास करून भाशेंची प्रमाणीकरण करपाची प्रक्रिया तीक्ष्ण आनी बेगीन जावपी आसता. ह्या प्रकाराण जेन्ना भाशेचे प्रमाणीकरण घडोवन हाडतात ते सामान्य मनशांक चड कृत्रीम आनी ताज्या सामान्य बुद्धीक कळपाक कठीण अशें दिसता. ताका लागून भाशेचे प्रमाणीकरण करतना आमी खयचोय एकच मार्ग आपणावचो न्हय. दोनय प्रकार आपणावचे आनी तांतले बरे आसा ते घेवचे अशें म्हाका दिसता.

कोंकणी भास आनी संस्कृतायेच्या उदरगती खातीर वावुरपी थळाव्या संस्थेचो आदार घेवन सांस्कृतीक आनी साहित्यिक कार्यावळी घडोवन हाडून विगड-विगड वाठारात आशिल्ल्या कोंकणी लोकांमदीं संपर्क सादपाचो मार्ग आमी आपणावन भाशेचे प्रमाणीकरण करपाचे वावराक हातभार लावपाक जातले. नेमाळीं आनी खबरे पत्रांच्या आदारान कोंकणीचो प्रसार करून भाशेचे प्रमाणीकरण करपाचे वावराक हातभार लावपाक जातले.

नेमाळीं आनी खबरे पत्रांच्या आदारान कोंकणीचो प्रसार करून भाशेचे प्रमाणीकरण करपाचो वावर मुखार व्हरूंक जातलो. ताका लागून एकामेकां कडसून पैसाविल्ले लोक भावनीक नदरेन एकामेकांचे लागी पावतले.

अशे तरेचो वावर चलत आसतनाच कोंकणीचे लेखक आनी हेर बुदवंतांक एकठांय हाडून कोंकणी उलोवपी सगळ्या वाटांरांतल्यांक समजतली असली एकरुपी शैली घडोवपाक, प्रवृत्त करपाक जाय. आयच्या पुर्वजांनी हे दिकेन आतांमेरेन केल्लो वावर आमकां भोव उपकाराक पडतलो आनी प्रमाण कोंकणी घडोवपाचे वावरांत मोलादीक भर पडतली.

हो वावर करपात आमी, जैत जोडलें जायत तर ते कोंकणी उदरगतीचे वावरातले म्हान ऐतिहासीक कार्य जातले. हे ध्येय सादपा खातीर अखिल भारतीय कोंकणी साहित्य परिशदेन पावलां उखलूंक जाय.

## देवनागरी लिपी

कोंकणीक एकच लिपी ना म्हळ्ळे कोंकणीची संपूण उदरगती सादपाचे वाटेवेलें एक म्हत्वाचे आडमेळे जावन आसा. देवनागरी, रोमन, कन्नड, अरेबीक ह्यो पांच लिप्यो आजूय आमी वाफरतात. केंद्र साहित्य अकादमीन कोंकणी खातीर भोवमान दिवपाक देवनागरी लिपीतल्या साहित्याक मात मान्यताय दिल्ली आसतनाय अशें घडत आसा.

कोंकणी बरोवपाक देवनागरी हीच स्वाभावीक लिपी अशें दिसून मतरावे शेंकड्या- सावन देवनागरी लिपीत कोंकणी बरयत आयिल्ल्यान कोंकणी खातीर देवनागरी लिपीच आपणावचो निर्णय सगळ्या कोंकणी लोकानी सुदैवान घेतिल्लोच आसा. फाटल्या साडेचारशीं वर्सा मेरेन रोमन लिपीत कोंकणी बरोवपी गोंयच्या ज्या किरिस्तावांनी ते लिपीत खूबशे कोंकणी साहित्य रचयलां तांणी हेर भारतीय साहित्या कडेन समन्वय सादपाचो ध्येय नदरे सामकार दवरून कोंकणी खातीर देवनागरी एकच लिपी आसपाक जाय म्हळ्ळें तत्व मानून घेवन रोमन लिपी रोखडीच सोडनासतना कांय काळ मेरेन दवरपाचो विचार केल्लो आसा. मंगळूर वाठारात आशिल्ल्या किरिस्तावांनीय देवनागरी लिपी आपणावचो निर्णय घेतिल्लो आसून कांय काळ मेरेन मात कन्नड लिपीचो चड उपयोग करपाचो तांचो विचार आसा. देखून गोंय आनी मंगळूरच्या कॅथोलिक किरिस्तावांक काय काळ मेरेन दोन लिपीत कोंकणी बरोवपाची पद्धत चालू दवरपाक वाव दिवपाची गरज दिसून येता.

मळयाळम आनी कन्नड लिपींत हेर जे वरयत आसात तांणी रोखड्या रोखडे देवनागरी लिपीत बरोवपाची गरज आसा. अशे तरेन कोंकणी भाशेचो लिपीचो प्रस्न सोडोवंक जातलो अशें म्हाका दिसता.

## महत्वाच्यो घडणुको

कोंकणी भास आनी साहित्याचे उदरगतीचे मळार फाटल्या ६-७ वर्सांत काय महत्वाच्यो घडणुको घडिल्ल्यो आसात. कोंकणी भास आनी साहित्याचे उदरगतीक गोंय सरकारान १९८५ सालात गोंय कोंकणी अकादमीची स्थापणूक केल्या. व्याकरणाचे नेम थारावप आदीं वावर अकादमीन हातात घेतिल्लो आसा. कोंकणीचो समग्र उतरावळ तयार करपाचो वावर चालू आसा. विज्ञान विशींचे नेमाळे सुरू करून कोंकणी तंत्रीक उतरां घोळणुकेन हाडत आसा. शिवाय बालमेळ, लोकवेद संग्रह आदीं सांस्कृतीक आनी भाशीक उदरगतीचो वावर चलत आसा.

ह्या काळात गोंय सरकारान कोंकणीक सरकारी वेव्हाराची भास म्हूण मान्यताय

दिवपाची महत्वाची घडणूक घडिल्ली आसा. पुण गोंय सरकारचे राजपत्र अजून कोंकणीत येना. ते रोखडे कोंकणीत येवपाक जाय. भारतातल्या हेर राज्यांत थळावे राज्यभाशेंतच राज्यपत्रां येत आसात. गोंय ताका अपवाद आसपाक जायना. गोंयचो सगळो राजकारभार जेन्ना कोंकणीत जावपाक लागतलो तेन्ना गोंयकारांकच न्हय तर गोंया भायल्या सगळ्या कोंकणीं लोकांक ताजो अभिमान दिसतलो. देखून गोंयचो सगळो कारभार कोंकणींत जावपाचे दीस रोखडेच येतले म्हूण हांव आस्त बाळगितां.

अखिल भारतीय कोंकणी साहित्य परिशदेन आनी तशे तरेचे ध्येय-धोरण आपणायिल्ल्या हेर हेर राज्यांतल्या संस्थानी कोंकणीचो आसपाव भारतीय राज्य घटनेतल्या आठवे वळेरेत करपाचो जायते यत्न केल्ले आसात, अजून मेरेन आमकां तातूंत यश फाव जालें ना. अखिल भारतीय कोंकणी साहित्य परिशदेन केंद्र सरकाराकडेन संपर्क साधून ताजे खातीर चड नेटान यत्न करपाची गरज आसा.

भुरग्यांक मुळावे शिक्षण तांच्यां आवय भाशेंत दिवपाक जाय म्हळ्ळे विचार सगळ्यांक मान्य जाल्ले आसात. कोंकणी आवयभास आशिल्ल्यान गोंयकार भुरग्यांक कोंकणीतच मुळावे शिक्षण दिवपाक जाय म्हूण गोंय सरकाराकडेन अखिल भारतीय कोंकणी साहित्य परिशदेन सातत्यान मागणी करपाक जाय.

अखिल भारतीय कोंकणी साहित्य परिशदेन नदरे सामकार दवरिल्ले ध्येय आनी धोरण, देवाचे दयेन आनी कोंकणी मोग्यांच्या आदारान आनी सहकार्यान पूर्ण जातले म्हूण हांव आस्त बाळगीता. कोंकणीची उदरगत जावन समृद्ध जावो आनी देशातल्या हेर व्हड भाशेंच्या पंक्तीक बसो अशें हांव आंवडेता.

जय कोंकणी । जय हिंद ।

अ. भा. कों. सा. परिशदेच्या
अठराव्या अधिवेशनांक
यश आंवडेतां

# तालक

## तालक होम्स ॲन्ड इस्टेट्स
## तालक ॲन्ड एसोसिएट्स
## रामराज इंटरप्रायजीस
## आर. आर. कन्स्ट्रक्शन

आशियाना
कोंब - मडगांव - गोंय
फोन : २०६७५

# अखिल भारतीय कोंकणी साहित्य परिशदेचो धांवतो इतिहास

यशवंत सदानंद पालेकार

भारतीय इतिहासांत वीसावो शेंकोडो चड म्हत्वाचो आसा. अख्या भारतांत एकाच वेळार व्हड प्रमाणांत लोक–जागृताय जावपाचें म्हान पर्व अशें ताजें वर्णन करपाक जाय. आसेतु – हिमाचलांत स्वाभिमानाचो अपूर्व, अतुलनीय असो हुंवार उफेलो आनी भारतीय इतिहासाक अवर्णनीय अशीं मोडणी मेळ्ळी. युगपुरुस महात्मा गांधी हांच्या असाधारण व्यक्तिमत्वाचो प्रभाव अख्या भारतीय समाजाचेर पडलो आनी भारतीय विराटपुरुस स्वत्व, सत्व आनी स्वाभिमानाचो वसो लागून सडसडीत जागो जालो.

## कोंकणीचो स्वाभिमान

ज्या मनशाक स्वत्व होलमता आनी सत्वाचें आकलन जाता तेन्ना ताज्यांतलो स्वाभिमान जागो जाता. ह्या स्वाभिमानाचो केंद्र बिंदू "स्वत्व" आसता. स्वताविशीं जाका स्वाभिमान आसता तोच खरो स्वदेशाभिमानी जावपाक शकता. स्वाभिमान सुरवेक स्वताविशीं जो आसता तो विकसीत जायत वता. स्वाभिमानी मनशाक आपणाविशीं आशिल्ल्या अभिमानांतल्यान आपणाल्या कुटुंबाविशींचो अभिमान किल्लता. तांतल्यान आपणाल्या गांवाविशीं, समाजाविशीं, देशाविशीं अशें चडत्या क्रमान अभिमानचो आंवाठ वाडत वता. स्वभाशेविशींचो अभिमानय तातूंत आसपावता. आपणाले विचार उगते करपाची आपणाली आवय भास ताज्या स्वाभिमानी जिणेचें म्हत्वाचें माध्यम आसता. हाजी जाणीव जाल्ल्यान भारतीयांत स्वभाशेविशींचो अभिमान वाडोवन तांतल्यान देशाभिमान जागो करपाचें तंत्र महात्मा गांधीजीन आपणायलें. ताजो अपेक्षीत परिणाम जालो. भारतांतले दर एक भाशीक लोक स्वभाशाभिमानान भारेले आनी भारतीय स्वतंत्रतायेचे चळवळेक असाधारण नेट आयलो. भारतांतल्या विगंड – विगंड भाशेंतले बरप वाचपी, उलोवपी आयकुपी कोंकणी भाशीक समाजाचेरय ताजो परिणाम जालो. कोंकणी लोक हेर भाशीक बरप वाचताले वा आयकताले इतलेंच न्हय तर त्या भाशांनी बरयताले आनी उलयताले. त्या भाशांत ते जाणकारच न्हय तर विव्दान आशिल्ले. हाका लागून त्या – त्या भाशांनी उगतो जावपी स्वभाशेविशींचो स्वाभिमान तांका जाणवतालो. त्याच वेळार आपणाली कोंकणी भास विजनवास भोगत आसा हाजी जाणीवय जाताली. सतत साहित्य परंपरा आशिल्ल्या हेर भाशीक साहित्यांत जी समृद्धताय आसा ती कोंकणींत ना हाजी तांकां खंत जाताली. विगंड विगंड वाठारांत शिंपडून विखंडीत जाल्लो कोंकणी भाशीक समाज भाशीक उदरगतीच्या ध्येय–प्रेरणेन सातत्यान कार्यरत आयना जायत तर कोंकणी समाज हेर भाशीक समाजांत विरगळून नानपश्चात जातलो हाजी जाणीव, भोंवतणच्या त्या काळच्या क्रांतीकारक स्वाभिमानी वातावरणांत वावुरपी कोंकणी भाशीक ध्येयवादी – स्वाभिमानी लोकांक पावला कणकणी जावपाक लागलो. महाराष्ट्र, कर्नाटक, केरळ, गोंय आनी हेर वाठारांत शिंपडल्ल्या अख्या कोंकणी समाजाक जाल्ल्या हे जाणीवेंतल्यान कोंकणी भास, संस्कृताय आनी समाज निगोवन समृध्द करपाचो विचार मुखार आयलो. हो विचार मुखार व्हरपाक कांय जाण वावुरपाक लागले.

## पुरुषार्थी स. माधव शानभाग

भारतीय स्वतंत्रतायेच्या झुजांत कारवार, अंकोला, कुमठा, शिरशी, सिध्दापूर ह्या वाठारांतल्या लोकांनी असाधारण कर्तुब केल्लें आसा. ह्या वाठारांतल्या लोकांनी अंकोल्यांत केल्लो मोठो सत्याग्रह अख्या भारतांतच न्हय तर संवसारभर गाजिल्लो. सरदार

वल्लभभाई पटेल हांच्या मार्गदर्शना खाला बार्डोलीत जाल्ल्या सत्याग्रहाच्या तोडीचो तो सत्याग्रह जाल्लो देखून माहात्मा गांधीन अंकोले केल्लो मिठा सत्याग्रह "दक्षिण भारतातलो बार्डोली सत्याग्रह" अशें म्हणून तेन्ना सत्याग्रह करतल्यांची तोखणा केल्ली. अशे तरेच्या वाठारात रावपी कोंकणी लोक थंयसल्ल्या हेर लोकां भाशेन अत्यंत स्वाभिमानी आसले बगर कशें रावतीत? तांच्यातल्या स्वभाशेविशींच्या स्वाभिमानान पेट घेतलो आनी त्या वाठारात कोंकणी चळवळेची बुनयाद बसली. धेय साधने खातीर कसलोय त्याग करपाक तयार आशिल्ल्या त्या कोंकणी लोकांचे मुखेलपण सर्गेस्त माधव मंजुनाथ शानभाग हांचे कडेन आयले. ते कोंकणीचो बावटो घेवन कोंकणी लोक आशिल्ल्या उत्तर कन्नड आनी दक्षिण कन्नड वाठारात भोंवले. त्या काळात वकिलीचो धंदो करतल्यांक पयसो जोडपाची व्हड संद आसतनाय तांणी त्या धंद्याकडेन मातूय लक्ष दिनासतना आपणाली जीण कोंकणी खातीर ओंपली.

कोंकणी भास, संस्कृताय आनी समाजाची उदरगत जावपाक जाय आसत तर कोंकणी लोकांनी एकठांय येवन आपणालो अुजळ फुडार घडोवपा खातीर दिशा थारावपाची गरज आशिल्ली. (सर्गेस्त) माधव मंजुनाथ शानभाग गांवां-गांवांनी आनी दारां-दारांनी भोंवून लोकांचे ते विशींचे विचार आयकताले. कोंकणी चळवळ सुरू करपाक योग्य वातावरण आनी लोकांची मानसीक तयारी आसा हाजी जाणीव तांका जाल्ली. अशें वेळार कोंकणी परिशद घडोवन हाडत तर ती यशस्वी जावपाक शकतली अशें तांकां दिसले आनी तांणी ८ जुलय, १९३९ दिसा कारवारात कोंकणी परिशद घडोवन हाडपाचो इतिहासीक निर्णय घेतलो. कोंकणी भास उलोवपी लोक जे विगंड-विगंड वाठारात आसात तांचो एकवट घडोवप, कोंकणी भाशेविशीं लोकांत जी उणाकपणाची भावना आसा ती ना करप, देवनागरी लिपी आपणावन कोंकणीची प्रमाण शैली घडोवप आनी कोंकणीत चडान-चड साहित्य निर्मणी करून कोंकणी संस्कृताय समृध्य करपाक वावुरप हो उद्देश नदरे सामकार दवरून ही परिशद जातली अशें तांणी जाहीर केलें. तांच्या ह्या विचाराक जायत्या जणांनी तेंको दिलो आनी सहकार्य दिवपाचे मानून घेतले.

सर्गेस्त माधव शानभाग हांका कोंकणीचे वावरात सहकार्य दिल्ल्यांत मल्लापूर (कारवार) चे (सर्गेस्त) सुब्राय नाडकर्णी हे मुखार आशिल्ले. ते भाटकार आशिल्ल्यान तांका आपणालो वेळ दिवप साध्य आशिल्लो. कारवार-अंकोला वाठारात भोंवन कोंकणी परिशदेविशीं प्रचार करपाची जापसालदारकी तांणी आपणाचेर घेतली. हेर कडेन माधव शानभाग भोंवले.

**पयली परिशद : १९३९**

कारवारात बाई कुंवरबाई शाळे सामकार घाल्ल्या मांटवांत सकाळीं ११.०० वरार जाल्ल्या पयल्या-वयल्या कोंकणी परिशदेचे यजमान बंकिकोडचे (सर्गेस्त) कृष्ण विठोबा प्रभू आनी येवकार अध्यक्ष माधव मंजुनाथ शानभाग हे आशिल्ले. परिशदेक चित्रापूर आनंदाश्रम मठाचे मठाधीश विज्ञानंदजी स्वामी आयिल्ले. परिशदेक अपेक्षेपरस चड लोक आयल्यात म्हूण येवकार अध्यक्ष शानभाग हांणी खोस उगतायली. आवय भास कोंकणी विशींच्या मोगाक लागून इतले लोक येवपाक शकले अशें सांगून तांणी कोंकणीक "लिपी ना व्याकरण ना" म्हूण हिणसायतल्यांची अपरबुध्दपणाविशीं खंत परगटायली आनी सगळ्या कोंकणी लोकांनी स्वाभिमानान कोंकणीचो वावर मुखार व्हरचो म्हूण मागले. राजाश्रय वा कसलोच आदार नासतना ही भास तिगूय उरल्या तशें सांगून विगंड-विगंड वाठारांत भोव नामना मेळयिल्ले बुदवंत लोक जी कोंकणी भास उलयतात ती गोड, रसाळ आनी म्होंवाळ भास देशातल्या हेर भास भयणांच्या पंगतीत मानान बसपा सारखी करपाक सगळ्यांनी तन-मन धनान आनी एकवटान वावुरपाक जाय अशेंय सांगले.

अध्यक्षपदां वेल्यान उलयतना कृष्ण विठोबा प्रभू हांणी कोंकणी खातीर केल्ल्या वावरा खातीर माधव मंजुनाथ शानभाग हांची तोंड भरून तोखणा केली आनी कोंकणीक बरे दीस येवपाक जाय आसा तर सगळ्या कोंकणी मोग्यांक तांचे भशेन "कोंकणीचे पिशें" लागपाची गरज आसा अशेंय सांगले.

ह्या परिशदेक मुखेल सोय-यो म्हूण (सर्गेस्त) कृष्णबाय पणजीकर हाजीर आसल्यो. श्री. कृष्णनाथ

हळदीपूरकर, श्री. व्ही. एस. गोकर्ण, फादर आर. माशादो, श्री. सोवरीन सिल्वा, श्री. कृष्णा एन. नायक, श्री. हनुमंत माजरेकर, श्री. पी.एस. कामत, श्री. अनंत राणे, श्री. ए. आर. नाडकर्णी, श्री. वाय. टी. नाडकर्णी, श्री. नरसिंव्ह सो. शानभाग, श्री. नरहरी व्ही. प्रभू, श्री. नंदकुमार शर्मा, श्री व्ही जी. चंदावरकर, श्री. रंगा शानभाग, श्री. सुब्राय. नाडकर्णी, श्री. नरसिंव पुराणिक, श्री. संजीव नागरकट्टी, श्री. रामचंद्र महाले, श्री. भवानीशंकर माविनकुर्वे श्री. हरी अनंत पै. श्री. शामराव शेणवी, श्री. जगन्नाथ कामत, श्रीमती सुहासिनी बोरकार, श्रीमती मिथिला नाडकर्णी आदीं मानदीकांनी वांटो घेतिल्लो.

ह्या परिशदेत नाटक वाचन, कविता वाचन, महिलांची भासाभास, भजन आदी साहित्यीक आनी हेर कार्यावळ जाली. दोन दीस चलिल्ल्या ह्या परिशदेत कांय म्हत्वाचे थाराव मानून घेतले. कोंकणी उलयतल्यांनी आपणल्या दिसपट्टे वेव्हारात कोंकणीचो उपयोग करचो, पत्र वेव्हार, हिशोबपटी आनी हेर बरप कोंकणीत करचे, सरकारान मुळावे शिक्षण देवनागरी लिपीतल्या कोंकणीत दिवपाची वेवस्था करची. कोंकणी भुरगीं आशिल्लेकडेन कोंकणी मुळावी शाळां उगडची, वाचनालयांक कोंकणी पुस्तकां घेवपाची मान्यताय दिवची, गरजेची कोंकणी पाठचपुस्तकां उजवाडावची, जनगणनें वेळार कोंकणी उलोवप्यांनी आपणली आवयभास कोंकणी म्हूण नोंद करची, पुस्तकां, नेमाळीं, पत्रकां कोंकणीत उजवाडावची, आदी थाराव मानून घेतले आनी ही ऐतिहासीक परिशद सोंपली. अशें तरेन कोंकणी समाजात पुरुषार्थ जागो करपी कोंकणी परिशदेची बुनयाद कोंकणीचे म्हान युगपुरुस सर्गेस्त माधव मंजुनाथ शानभाग हांगी घालून ते अजरंवर जाले.

### दुसरी परिशद : १९४०

दुसरी कोंकणी परिशद दक्षिण कन्नड जिल्ह्यातल्या उडुपी शारात जाली. कर्नाटकातल्या उत्तर कन्नड (कारवार) जिल्ह्यात आनी दक्षिण कन्नड (मंगळूर) जिल्ह्यात कोंकणी लोक चड प्रमाणात रावतात. पयली परिशद कारवारात जाली. दुसरी परिशद उडपीत घडोवन त्या वाठारात कोंकणीचो संदेश पावोवपाची गरज आशिल्ली. सिंडिकेट बँकेचे एक संस्थापक डॉ. टी. माधव ए. पै हांच्या मुखेलपणा खाला ही जापसालदारकी थंयच्या लोकांनी घेतली. पयल्या परिशदेत वांटो घेतिल्ले कारवार वाठारातले वाबुरपीच कामाक लागले. ३१ डिसेंबर, १९४० दिसा मद्रास प्रांताचे कायदे मंडळाचे अध्यक्ष (सर्गेस्त) श्री जेरोम सालदान्य हांच्या अध्यक्षते खाला ही परिशद व्हडा दबाज्यान जाली. डॉ. टी. एम. ए. पै परिशदेचे येवकार अध्यक्ष आशिल्ले. हे दोगय त्या वाठारांतले नांवांजिल्ले गडे आशिल्ल्यान कोंकणी परिशदे कडेन जायत्या जाणांचे लक्ष गेले. कोंकणीच्या आवाजाक प्रतिष्ठा मेळूंक पावली. मद्रास, मुंबय आदीं पयसल्या वाठारातल्यानय परिशदेक लोक आयले.

कोंकणीची निजाची लिपी देवनागरी जाल्यान सगळ्यांनी ती आपणावपाचो यत्न करपाक जाय, जनगणने वेळार कोंकणी भाशीक लोकांनी आपणाली आवयभास कोंकणी म्हूण नोंद करपाक जाय. आकाशवाणीन कोंकणी लोक आशिल्ल्या वाठारात कोंकणीत कार्यक्रम प्रसारीत करपाक जाय आदीं थाराव त्या परिशदेत मानून घेतले.

### तिसरी परिशद : १९४२

तिसरी कोंकणी परिशद मुंबयत जाली. मुंबयत काम धंद्याक लागून विंगड-विंगड कोंकणी वाठारातले लोक येवन राविल्ले आसात देखून थंय परिशद घेतल्यार तीं खरे अर्थान प्रातिनिधीक कोंकणी परिशद जातली अशें दिशिल्ल्यान हो निर्णय घेतिल्लो. १९४२ सालात एप्रील ४ आनी ५ तारखे दीसा जाल्ल्या ह्या परिशदेक कारवार आनी मंगळूर वाठारातलेच न्हय तर केरळ आनी गोंयचेय लोक आशिल्ले. त्या वाठारातल्या लोकांनी कोंकणी परिशदेत पयलेच खेपेक खेप वांटो घेतिल्ल्यान कोंकणी एकवटाचे दर्शन थंय घडलें. आदल्या परिशदेक लागून कर्नाटकात कोंकणी विशींची जाग्रताय जाल्ली आशिल्ल्यान परिशदेक चड लोक कर्नाटकातले आयिल्ले.

गोंयकारांत कोंकणीचो पुरुषार्थ जागो केल्ले आधुनीक कोंकणी साहित्याचे युगप्रवर्तक शणै गोंयबाब, (सर्गेस्त वामन रघुनाथ शणै वर्दे वालावलीकार)

हांणी ह्या परिशदेत वांटो घेतलो. ते परिशदेचे येवकार अध्यक्ष आशिल्ले. कोंकणी चळवळेक आनी कोंकणी परिशदेक सदांकाळ पोसपण दिल्ले मुंबयत स्थायिक जाल्ले सावंतवाडीचे सर्गेस्त एफ. जे. मार्तिरीस हेंवय ह्या परिशदेक हाज़ीर आशिल्ले. ह्या परिशदेचे सर्गेस्त प्रो. आर्माद मेनेझीस हे आशिल्ले. परिशदेत पुस्तकाचे प्रदर्शन घडोवन हाडिल्ले. ताजे उद्‌घाटण इस्पानोल पाद्री रेवरंड फादर जॉर्डी हांच्या हातान घडोवन हाडले.

परिशदेतले सर्गेस्त वामन रघुनाथ शणै वर्दे वालावलीकार हांचे येवकाराचे उलोवप अभ्यासपूर्ण आनी विदवत्तापूर्ण आशिल्ले. "येवकार अध्यक्षाले उलोवप" ह्या नांवान ताजे पुस्तकाचे रुपान प्रकाशन केलें. कोंकणी चळवळीचो अभ्यास करतल्यांक मार्गदर्शन करपाक ह्या पुस्तकाचो भोव बरो उपयोग जायत आयला. कोंकणी साहित्यांतलो तो एक अमूल्य असो ग्रंथ जाला.

कोंकणी लोकांनी कोंकणी साहित्य घडोवपाचो यत्न करपाक जाय ते खातीर कोंकणीचे प्रमाण रूप घडोवपाक जाय आनी कोंकणीच्या दिसपट्टे वेव्हारांत उपयोग करपाक जाय म्हूण अध्यक्षांनी आंपणाल्या उलोवपात सांगलें. कोंकणीन देवनागरी लिपी आपणायल्यार भारतातल्यो जायत्यो हेर भासोंय शिकप सोंपेपणान साध्य जातले अशेंय तांणी सांगलें. कोंकणी उतरावळीचो आपणाक सराव नाशिल्ल्यान आपणालें उलोवप इंग्लेज भाशेंत करपाचो प्रसंग आपणाचेर आयला अशें सांगून तांणी कोंकणींत उलोवप करूंक जालें ना म्हूण खंत परगटायली.

कोंकणी लोकांनी कोंकणीक "आमची भास" म्हूण स्वाभिमानान म्हणूंक जाय अशें फा. जॉर्डी हांणी पुस्तकांचे प्रदर्शन उगते करतना सांगलें.

ह्या परिशदेन बारा थाराव मानून घेतले. भोवतेक सगळे थाराव आदल्या परिशदेंत मानून घेतिल्लेच आशिल्ले. कोंकणीचो वाव सातत्यायेन मुखार व्हरपाक एक सदांकाळ संस्था आसपाची गरज ध्यानांत घेवन "कोंकणी भाशा मंडळ" घडोवपाचो निर्णय ह्या परिशदेन एक थाराव करून घेतलो आनी ५ एप्रील, १९४२ दिसा मुंबयत कोंकणी भाशा मंडळ सुरू केलें.

## चवथी परिशद : १९४९

कारवारात पयली कोंकणी परिशद जाल्या उपरांत देड - दोन वर्साच्या अंतरान दुसरी आनी तिसरी परिशदो जाल्यो. पूण त्या उपरांत जाल्ली चवथी परिशद स - सात वर्सांनी जाली. भारतात स्वतंत्रताये चळवळेक नेट धरिल्ल्यान कोंकणी चळवळे कडेन लक्ष दिवपाक वेळ फावलो ना हें ताजें कारण आसूं येता. पूण देशाक स्वतंत्र मेळतकच अख्या देशात भाशीक वादाक वोतो आयलो. ताका लागून कोंकणी वाठारा भोंवतणे आशिल्ल्या कन्नड आनी मराठी वाठारात भाषावार प्रांतरचणूक घडोवन हाडपाविशींच्या चळवळेन सामकोच नेट धरलो. मराठीची बोली कोंकणी हो वाद उबो करून अख्खो कोंकणी वाठार मराठी भाशीक महाराष्ट्रात आसपावन संयुक्त महाराष्ट्र घडोवपाच्या मागणेक नेट आयलो. कन्नडा कडेन कोंकणीचो लागसाराचो संबंद आसा आनी पुर्विल्ले काळात कोंकणी वाठारात कन्नड राज्यकर्त्यांचे राज्य चलताले देखून कोंकणी वाठार सगळो संयुक्त कर्नाटकात आसपावपाक जाय म्हळ्ळी मागणीय मुखार आयली. पोर्तुगेजांच्या पाख्यातळा आशिल्ल्या गोंयचेरय ते अधिकार सांगपाक लागले. आपणाले अस्तित्वच ना जातली हाजी जाणीव जातकच कोंकणी समाजातले स्वाभिमानी सडसडीत जागे जाले. सगळ्या कोंकणी वाठारातले लोक मुंबयत आशिल्ले देखून थंयच कोंकणी परिशद घेवपाचो निर्णय घेतलो.

मुंबय १९४२ सालात जाल्ल्या ह्या परिशदेचे अध्यक्ष मुंबयचे मेयर डॉ. एम. यु. मास्कारेन्हास हे आशिल्ले. रेवरेंड फादर एच. ओ. मास्कारेन्हास हे परिशदेचे अध्यक्ष आशिल्ले. चित्रापूर - - - पीठाधीश स्वामी आनंदाश्रमजी हांणी परिशदेचे उद्‌घाटण केले. कोंकणी गोमटी आनी गिरेस्त भास आसा म्हूण तांणी आपणाल्या उलोवपात सांगले. कोंकणीचो वावर जैतिवंत जावचो म्हूण तांणी आस्त परगटायली.

कोंकणी भास ही मराठी परस वेगळी भास ती मराठी परस पुर्विल्ली आनी समृध्द भास आसा अशें येवकार अध्यक्ष रेवरंड डॉ. एच. ओ. मास्कारेन्हास हांणी आपणाल्या अुलोवपात सांगलें. एकमेकां लागसार आशिल्ल्या भासांत कांय प्रमाणात

साम्य आसता हाजो लाब घेवन कोंकणीचेर मराठी जो अन्याक करता ताजे आड अख्या कोंकणी समाजान एकवटून प्रतिकार करपाचो तांणी उलो दिलो.

भारतात भाशावार प्रांतरचणूक जाल्यार देशाच्या एकवटाक बादिकार येतलो म्हूण परिशदेचे अध्यक्ष डॉ. एम. यू. मास्कारेन्हास हांणी आपणाल्या उलोवपात शिटकावणी दिली. पूण भाशावार प्रांत रचणूक करपाचे सरकारान थारायलेंच जाल्यार कोंकणी लोक भोवसंख्येन आशिल्लो वाठार एकवटावन कोंकणी घटक राज्य घडोवपाची मागणी तांणी केली.

## पांचवी परिशद : १९५२

सगळ्या वाठारातले कोंकणी लोक मुंबयत आशिल्ल्यान आनी (सर्गेस्त) श्री. एफ. जे. मार्तिरीस सारखे निश्ठेन परिशदेचो वावर करपी आशिल्ल्यान कोंकणी परिशद थंय घडोवन हाडप सोपे आसताले. देखून सतत तिसरे फावटी कोंकणी परिशद भरोवपाचो योग मुंबय शाराक मेळ्ळो. १९५२ सालात फेब्रुवारी २३ आनी २४ तारखे दिसा प्रो. डॉ. मारियान सांल्दान्य हांच्या अध्यक्षतेखाला भरिल्ल्या पांचव्या कोंकणी परिशदेचे येवकार अध्यक्ष श्री. बाळकृष्ण (बाकीबाब) बोरकार हे आशिल्ले. मुंबयचे आर्चबिशप व्हेलेरियन ग्रेमियस हांच्या हातान परिशदेचे उद्‌घाटण जाले.

कोंकणी भास म्होंवाळ आसून ती अर्पपूर्ण नकसूद अंतरांनी भरून आसा देखून उतरां-उतरांतलो बारीक-सारीक अर्थ-बोधय अुगतावपाची तांक कोंकणीत आसा अशें बाकीबाब बोरकार हाणी येवकार अध्यक्षाचे उलोवपातल्यान सागलें. उतरां-उतरांतली कुसां उगतावपी उतरांची वळेरीच तांणी आपणाल्यां अुलोवपा वेळार सांगली. तिसऱ्या कोंकणी परिशदेवेळार येवकार अध्यक्ष आशिल्ल्या वामन वर्दे-वालावलीकार हांच्या अुलोवपा भाशेन बाकीबाब बोरकार हांचे उलोवप साहित्याचे कसाक लागपा सारखे प्रतिभापूर्ण आशिल्लें.

कोंकणी ही भारतातली म्हालगडी भास आसून १७ वे शेंकडयांतय तातूंत व्हड प्रमाणांत साहित्य निर्मिती जाताली अशें सांगून येवरोपातल्या पुस्तक संग्रहांत कोंकणीत अणकार केल्ले रांमायणा सारखे ग्रंथय पळोवपाक मेळटात म्हूण प्रो. जे. मारीयान सांल्दान्य हांणी अध्यक्षपदावेल्यान उलयतना सांगलें.

मुंबय सरकारान मुळावे शाळेंत कोंकणी शिकोवपाक मान्यताय दिली आनी आकाशवाणीचेर कोंकणीक स्थान दिले म्हूण परिशदेन सरकारचे उपकार मानले. देशात भाशवार प्रांत रचणूक करपाची मागणी नेटान जायत आसली तरी कोंकणी भाशीक राज्य घडोवपाची मागणी कोंकणी परिशद करिना, पूण गरज दिसत तर तशीं मागणी करपाचो हक परिशद राखून दवरता अशें एका थारावान म्हळें. भारतीय घटनेच्या ३४७ कलमाक अणसरून कोंकणी लोक चड प्रमाणात आशिल्ल्या तेन्नाच्या मद्रास आनी मुंबय राज्यांत कोंकणीक प्रांतीक भास म्हूण मान्यताय दिवपाचो थाराव परिशदेन मानून घेतलो. पोर्तुगीज पाख्यातळा आशिल्ल्या गोंयात कोंकणीक राज्य भाशेचे स्थान दिवन कोंकणीत शिक्षण दिवपाची वेवस्था करची मागणी ह्या परिशदेन पोर्तुगीज सरकाराक केली.

परिशदेक गोंयकार व्हडा प्रमाणात आयिल्ले. गोंयच्या सुटके उपरांत गोंयांत कोंकणीचे स्थान कशें आसचे हे विशीं पयल्याच फावटी विस्तारान भासाभास करपाची संद परिशदेक मेळ्ळी आनी तांतल्यान कोंकणी भाशीक गोंय घटकराज्य घडोवपाच्या विचाराची बुनयाद घाली.

## सवी परिशद : १९५७

पांचवी कोंकणी परिशद जाल्या उपरांत चार-पांच वर्सां मेरेन परिशद जावंक ना. मदेगतीच्या काळात भारतातल्या राज्यांची पुनर्घडणूक जावन भाशावार घटक राज्यां जालीं. कोंकणी भाशीक मुखेल वाठार गोंय, पोर्तुगीजांच्या पाख्यातळा आशिल्ल्यान आनी हेर कोंकणी वाठार कर्नाटक आनी महाराष्ट्रात वांटून गेल्ल्यान विखंडीत जाल्ल्या कोंकणी भाशीक समाजाचो आवाज थंड पडिल्लो. अशें वेळार कोंकणी चळवळेक संजीवनी दिवपाची गरज आशिल्ली. गोंयची सुटके चळवळ आनी कोंकणीची उदरगतीची चळवळ हातांत हात घालून एकाच वेळार चलत तर स्वतंत्र जातकच गोंयचो फुडार स्थाभाविक तरेन घडतलो ही जाणीव आशिल्ले ध्येय-प्रेरणेन वावुरत आशिल्ले. स्वतंत्र भारतात मोकळो वारो सुटिल्ल्यान गोयकार तरनाटयांत नवो उत्साह वाडत आशिल्लो. अशें वेळार फुडाराची दिशा थारावयाक एकवटान

वावर जावपाची गरज आशिल्ली. हाजी जाणीव जाल्ले एकठांय आयले आनी तांणी सवी परिशद मुंबयतच घेवपाची थारायलें.

मुंबयतच १९५७ सालात जाल्ल्या परिशदेचे अध्यक्ष डॉ. सुमित्र मंगेश कत्रे हे आशिल्ले. येवकार अध्यक्ष श्री. रामचंद्र नारायण नायक हे आशिल्ले. परिशदेचे उद्घाटण आचार्य काकासायब कालेलकर हांच्या हातान घडोवन हाडले. कोंकणी ही एक स्वतंत्र भास जाल्ल्यान आनी ती समस्त गोंयकारांची आवयभास ज़ाल्ल्यान गोंय सुटके उपरांत ती गोंयची राजभास जावपाक जाय म्हूण तांणी परिशदेचें उक्तावण करतना केल्ल्या उलोवपांत सांगले.

कोंकणी विंगड – विंगड वाठारात शिंपडिल्ल्यान कोंकणी भाशेन भोव शैल्यो आसात. विंगड – विंगड भाशेंतलीं उतरां त्या – त्या वाठारातल्या कोंकणीत घोळटात. ताका लागून ती भास समृद्ध जाल्ली आसा. कोंकणीतल्या सगळ्या शैलींचो भासशास्त्रीय नदरेन अभ्यास करून प्रमाण साहित्यीक शैली घडोवपाचे नदरेन सातत्यान यत्न जावपाक जाय अशें नामनेचे भाशा शास्त्रज्ञ डॉ. सुमित्र मगेश कत्रे हांणी आपणाल्या अध्यक्षीय भाशणात सांगले. कोंकणीत जितले चड साहित्य जातले तितले तिजे बळगें वाडतले. अशे तरेन साहित्य निर्मितीचे कार्य जायत आसतनाच कोंकणीक भारतीय घटनेत आसपावन घेवपाचो यत्नय जावपाक जाय अशेंय तांणी सांगले.

### सातवी परिशद : १९६०

गोंय स्वतंत्र करपाच्या वावराक नेट आयिल्लो. गोंय स्वतंत्र जातकच थंयची राजभास कोंकणी जावपाक जाय अशें म्हणपी जायते जाण आशिल्ले. पूण कोंकणी मराठीची बोली आनी कोंकणी उलोवपी लोकांची साहित्यीक भास मराठी अशें म्हणपी बरेच लोक गोंयची राजभास मराठी जावपाक जाय अशें म्हणटाले. गोंयाक तेंकून आशिल्ले कारवार, सुपा, हळयाळ हो कोंकणी वाठार भाशांवार प्रांत रचणूके वेळार कर्नाटक राज्यात आसपाविल्लो. ह्या वाठारातल्या भोवतेक जाणांक कर्नाटकात आसपाचे मान्य नाशिल्ले. कशेंय करून एक फावटी कर्नाटक राज्यातल्यान भायर सरचे अशें तांका दिसताले. मराठी ही कोंकणी उलयतल्यांची साहित्यीक भास अशें प्रचार करतल्यांचो प्रभाव त्या लोकांचेर भोव प्रमाणात जाल्लो. देखून तो वाठार महाराष्ट्रात आसपावन घेवपा खातीर ते वावुरत आशिल्ले. तांणी महाराष्ट्र एकीकरण समिची घडोवन चळवळ सुरू केल्ली. विधानसभेच्या वेंचणुकेत ह्या वाठारातल्यान समितीचे वांगडी वेंचून आयिल्ल्यान महाराष्ट्र एकीकरण समितीच्या चळवळेक नेट आयिल्लो. त्या वाठारात महाराष्ट्र एकीकरण समिती जैतिवंत जाल्ल्यान केंद्र सरकार तो वाठार महाराष्ट्रात विलीन करतलोच अशें सगळ्यांक तेन्ना दिसताले. श्री. माधव मंजुनाथ शानभाग हांणी १९३९ सालात पयली कोंकणी परिशद घडोवन हाडिल्ले वेळार जे कोंकणी खातीर वावुरिल्ले ते म्हाल्लगडेय महाराष्ट्र एकीकरण समितीचें आलाशि–याक गेल्ले. ताका लागून ह्या वाठारात कोंकणी चळवळीचो आवाज सामकोच बंद जालो. महाराष्ट्र एकीकरण समितीचो उद्देश सफळ जावन हो सगळो वाठार महाराष्ट्रात गेल्यार गोंय भोंवतणचो सगळो वाठार महाराष्ट्रात गेल्ले भशेन जातालो आनी गोंय सुटके उपरांत गोंय महाराष्ट्रात विलीन करपाच्या मागणेक विरोध करपाची तांक कोणाकच उरनाशिल्ली. ताका लागून कोंकणीचेर म्हान संकट येतले आशिल्ले. हाजी जाणीव जावन कारवारचे कांय कोंकणी मोगी चोंयवटेन खर विरोध आसतनाय एकठांय आयले. सवी कोंकणी परिशद कारवारात घेवपाचो तांणी निर्णय घेतलो आनी समिती घडयली. ही खबर जाहीर जातकच महाराष्ट्र एकीकरण समितीन ताका खर विरोध उगतायलो. तरी पूण परिशदेची तयारी चलत रावली. खर विरोध करूनय परिशद जातलीच अशें दिशिल्ल्यान परिशदेचो दीस थोंडयाच दिसार आसतना महाराष्ट्र एकीकरण समितीन येवकार समितीच्या अध्यक्षांक आनी सरचिटणीसांक मारतले आनी परिशदेखातीर नियोजीत केल्ल्या सभाघराची मोडतोड करतले म्हूण धमकी दिली. ताका लागून स्वामी प्रभानंदजी हांणी येवकार अध्यक्षपदाचो राजिनामो दिलो. आनी सभाघराच्या वेवस्थापकांनी परिशदेखातीर सभाघर दिवपाचे उतर फाटी घेतले. अशें परिस्थितितय ही सातवी परिशद कारवारात घडोवन हाडली आनी कोंकणी ही स्वतंत्र भास म्हूण जाहीर करून कोंकणी आनी गोंयच्या

फुडाराची वाट मोकळी दवरपाचें इतिहासीक कार्य केलें.

कारवारच्या नगरपालिका सभाघरात कोंकणी परिशद जाली. कोंकणी परिशदेच्या नांवान बदल करून "अखिल भारतीय कोंकणी परिशद" ह्या नांवान ती जावची म्हूण केल्ली सुचोवणी सगळयांनी मानून घेतली.

अखिल भारतीय कोंकणी परिशदेची ही सातवी बसका डॉ. बी. ए. सालेतोरे हांच्या अध्यक्षतेखाला जाली. श्री. पद्मनाभ सुब्राय कामत हे येवकार अध्यक्ष आशिल्ले. गोकर्ण–पर्तगाळ मठाचे स्वामी श्रीमद व्दारकानाथतीर्थ हांच्या हातान परिशदेचे उद्घाटण जाले. संस्कृत उतरांचो आदार घेवन कोंकणी भास समृध्द करपाक जाय अशें तांणी आपणाल्या अुलोवपात सांगले. खंयचीय भास समृध्द जावपाक जाय जाल्यार राजाश्रयाची गरज असता देकून सरकारा कडसून अर्थिक आदार मेळोवन घेवपाचो यत्न जावपाक जाक अशेंय तांणी सांगले.

येवकार अध्यक्ष श्री. पी. एस. कामत हांणी कोंकणी भाशे विशींचे अभ्यासपूर्ण विचार मांडले आनी कोंकणी मराठीची बोली न्हय म्हळ्ळे सप्रमाण दाखोवन दिले. कोंकणी वाठार हो महाराष्ट्राचो भाग केन्नाच नाशिल्लो हेंवय तांणी आपणाल्या अुलोवपात दाखोवन दिले.

अध्यक्षपदावेल्यान अुलयतना डॉ. बी. ए. सालेतोरे हांणी गोंय सुटके उपरांत भोंवतणचो वाठार एकवटावन कोंकणी भाशीक राज्य घडोवपाक जाय म्हूण आपणाल्या अुलोवपाक मागणी केली. भाशावार प्रांत करपाचें भारतीय राज्य घटणेन मानून घेतिल्यान कोंकणी भाशीक लोकांचे वेगळे राज्य घडोवप केंद्र सरकारचे कर्तव्य जावन असा अशेंय तांणी सांगले.

### आठवी परिशद : १९६२

गोंय सुटके उपरांत अख्खो कोंकणी भाशीक वाठार स्वतंत्र जालो. कोंकणी भाशीक लोकांची भाशीक, सांस्कृतीक आनी अर्थिक नदरेन उदरगत करून घेवपाची संद आयली. अशे वेळार गोंय महाराष्ट्रात विलीन करपा खातीर गोंयचे महाराष्ट्रवादी महाराष्ट्रातल्या साम्राज्यशाही विचाराच्या लोकां वांगडा एकवटून वावुरपाक लागले. कोंकणी भाशीक सुपुल्ले घटक राज्याचे सपन पळोवपी स्वाभिमांनी कोंकणी मोगी सगळे बळ एकवटून ताजे आड झुजपाचीं तयारी करपाक लागले. गोंयकारांत कोंकणीचो पुरूषार्थ जागो करपाक अखिल भारतीय कोंकणी परिशदेची बसका घडोवन हागपाचो निर्णय तांणी घेतलो आनी कोंकणीचे मूळ पीठ गोंयच्या भूंयेर पयली कोंकणी परिशद १९६२ सालात घडोवन कोंकणी चळवळीचे इतिहासातले एक म्हत्वाचे पर्व घडोवन हाडले.

अखिल भारतीय कोंकणी परिशदेची आठवी बसका डॉ. मनोहरराय सरदेसाय हांच्या अध्यक्षते खाला मडगांवात जाली. परिशेदेच्या इतिहासात अध्यक्ष जावपाचो मान पयलेच फावटी कोंकणी साहित्यीकाक मेळ्ळो. परिशदेचे येवकार अध्यक्ष श्री. रवींद्र केळेकार आशिल्ले. ह्या परिशदेचे उद्घाटण करपाक राज्य सभेच्यो उपाध्यक्ष श्रीमती वायलेट आल्वा ह्यो आयिल्ल्यान सरकारी राजदरबारात पावपाचो मान कोंकणी परिशदेक फावो जालो. कोंकणी ही म्होवाळ आनी गिरेस्त भास अशें सांगून आपूण घरात कोंकणीच उलयता अशें तांणी परिशदेचे उद्घाटन करतना सांगले. कोंकणीक भारतीय राज्य घटनेत तिजें निजाचें स्थान फावो जावंक जाय अशेंय तांणी म्हळें.

कोंकणी भाशीक भुरग्यांक मुळावे शिक्षण तांच्या आवय भाशेतच मेळपाक जाय अशें येवकार अध्यक्ष श्री. रवीन्द्र केळेकार हांणी शिक्षण तज्ञांच्या मतांचो आदार दिवन सांगले. गोंयकारांचो पुरुशार्थ फकत कोंकणीतल्यानच जागो करपाक जातलो अशें सांगून कोंकणीक गोंयात तिचें हकाचे स्थान मेळोवन दिवपाक वावुरपाचो उलो तांणी गोंयकारांक दिलो.

कोंकणी बोली काय भास हो वाद घालून शक्त व्हगडायनासतना सगळया गोंयकारांनी कोंकणीची उदरगत घडोवन हाडपाक एकवटान वावुरचे अशें अध्यक्ष पदावेल्यान अुलयतना डॉ. मनोहरराय सरदेसाय हांणी आपणाल्या काव्यमय उतरांनी सांगलें आनी "कोंकणी भास आमची माय, आमची माय आमकां जाय" हो मंत्र परिशदेच्यां वाठारात घुंमयलो.

गोंयान कोंकणी भाशेक राजभाशेचे स्थान

दिवद, गोंयात मुळावे शिक्षण कोंकणी भाशेत दिवप, भारतीय घटनेच्या आठवे वळेरेंत कोंकणीचो आसराव करप, साहित्य अकादमीन कोंकणीक स्वतंत्र भास म्हूण मान्यताय दिवप, अदी थाराव ह्या परिशदेन मानून घेतले.

गोंयच्या राजकारणांक आनी कोंकणीच्या फुडाराक एक नित्सीत मार्गदर्शन करपाचे म्हान ऐतिहासीक कार्य ह्या परिशदेन घडले.

गोंय सुटके उपरांत गोंयात येवपाक भायल्यांक गोंयच्या सैनिक सरकारा कडसून परवानगी घेवपाचे बंधन आशिल्ल्यान ह्या परिशदेक कारवारचे ३०-३५ प्रतिनिधी सोडत तर हेर कडचे चड प्रतिनिधी वांटो घेवपाक शकले नात. कोंकणी परिशदेच्या इतिहासात व्हडा संख्येन लोक आयल्ले ही पयलीच परिशद आशिल्ली.

### णववी परिशद : १९६७

अखिल भारतीय कोंकणी परिशदेवी आठवी बसका जाल्या उपरांत गोंयात वेंचणूक आयली आनो अखे गोंयात राजकीय हुंवार आयलो. स्वाभिमानी गोंयकार आपणाली सगळी शक्त एकवटावन गोंयचे आनी कोंकणीचे अस्तित्व तिगोवन दवरपाक जीणे-मरणाच्या झुजांत पडले आनी कोंकणी चळवळेतली प्रत्यक्ष झुजाची त्यागमय पर्वाची सुरवात जाली. गोंयाभायले कोंकणी लोकय त्या झुजात समरस जावन गोंयकारांच्या, तांच्या म्हान कार्यात यश मेळचे म्हूण चिंतीत आशिल्ले. अशे वेळार कोंकणी परिशदेचो सुवाळो मनोवपाचो विचार करपाची तयारी कोणाची नाशिल्ली पुण १९६७ सालान मुंबयत स्थापणूक केल्ल्या कोंकणी भाशा मंडळाक २५ वर्सां पूर्ण जाताली. अशें वेळार एक दबाजो घडोवन हाडप गरजेचे आशिल्ले. हो कोंकणी भाशा मंडळाचो रूप्या उत्सव पांच दिसांचो मनोवपाचो निर्णय घेतलो आनी त्याच वेळार अखिल भारतीय कोंकणी परिशदेचे णववे अधिवेशन घेवपाचे थारायलें.

मुंबयत २९ सप्टेंबर ते २ ऑक्टोबर, १९६७ हें पांच दीस चलिल्ल्या कोंकणी भाशा मंडळ रौप्य महोत्सव उत्सवा वेळार जाल्ल्या अखिल भारतीय कोंकणी परिशदेचे अध्यक्ष पद्मश्री बाळकृष्ण (बाकीबाब) बोरकार हे आशिल्ले. रेवरंड मॉंसियोर फेर्नांदीश हे येवकार अध्यक्ष आशिल्ले. महाराष्ट्राचे मुख्यमंत्री श्री. वसंतराव नाईक हाणी परिशदेचे उद्घाटण केलें. कोंकणी खातीर वावुरपी कोंकणी भाशा मंडळान २५ वर्सां पूर्ण केलीं म्हुण ताणी आपणाल्या उद्घाटण उलोवपात खोस पर्गटायली आनी महाराष्ट्रात कोंकणीक हेर भासां प्रमाणे उदरगतीक पूर्ण वाव मेळटलो म्हुण आस्वासन दिलें.

कोंकणी भारतांतल्या खंयच्या आधुनीक भाशे परस शब्द संपत्तीन उणाक ना, कांय बाबतीत चड गिरेस्त आसा अशें अध्यक्षान आपणाल्या उलोवपात सांगून "कोंकणीत रवींद्र येता. ताका येवकार दिवपाक बारा हात रूंदेचो मार्ग करात" म्हूण उलो दिलो.

परिशदे वेळार घडोवन हाडिल्ल्या पुस्तक प्रदर्शनाचे उद्घाटण मुंबयचे मेयर डॉ. लिओन द. सौज हांणी केलें.

केंद्र साहित्य अकादमीन कोंकणीक स्वतंत्र भास म्हूण मान्यताय दिवप, कोंकणीचो आसराव भारतीय राज्य घटणेंत करप, कोंकणी लोक व्हडा संखेन आशिल्ल्या बाठारातल्या धारवाड आनी कोचीत आकाशवाणी केंद्रांत कोंकणी कार्यावळ प्रसारण करप अदी थाराव ह्या परिशदे मानून घेतले.

कोंकणी परिशदे वेळार यादस्तीक उजवाडायले. हे परिशदेचे पयले वयले यादस्तीक आशिल्लें.

### धावी परिशद : १९७४

गोंयात कोंकणीचो जिणे-मरणाचो प्रस्न सोपूंक नाशिल्लो. महाराष्ट्रवादी गोमंतक सरकार अधिकारार आशिल्ले. पूण ओपिनियन पोलाक लागून गोंय महाराष्ट्रात विलीन जावपाची भिरांत सोपिल्ली. कोंकणी खातीर वावुरतल्यांची शक्त उणी ना हाजी जाणीव राज्यकर्त्यांक जाल्ली. देखून सरकार अुक्तेपणान कोंकणी आड वावुरपाची धिटाय करनाशिल्ले. कोंकणी खातीर वावुरपीय सावशिदेन पावलां घालताले. सरकार आनी कोंकणी मोगी एकामेका सामकार झुजाचे पावित्र्यात जरी आयले तरी दोगांय मदीं शस्त्रसंधी जाल्ले भशेन वातावरण आशिल्ले. अशें वेळार केंद्र साहित्य अकादमीचे डॉ. सुनितीकुमार चटर्जी अध्यक्ष जाल्ले. कोंकणी भाशेक न्याय मेळपाक जाय अशें तांका दिसताले. अशें तरेचे वातावरण

आशिल्ले वेळार बुदवंतकायेन मुखावेली पावलां घालपाचो विचार कोंकणी मोग्यांनी केलो. योग्य वातावरण तयार करपाक अखिल भारतीक कोंकणी साहित्य परिशदेचें धावें अधिवेशन गोंयची राजधानी पणजेंत घडोवन हाडपाचो तांणी निर्णय घेतलो. परिशदेक राजकी स्वरूप ना अशें, दाखोवपा खातीर परिशदेच्या नांवान "साहित्य" हे उतर घाल्लें.

अशे तरेन अखिल भारतीय कोंकणी साहित्य परिशदेचे धावे अधिवेशन १९७४ सालात फेब्रुवरीच्या ८, ९ आनी १० तारखे दीस घडोवन हाडले. परिशदेचे अध्यक्ष श्री. के. कमळाक्ष पै हे आशिल्ले, येवकार अध्यक्ष श्री. अनंत नरसिंह नायक हे आशिल्ले. परिशदेचें उद्घाटण करपाक नामनेचे डॉ. सुनितीकुमार चटर्जी आयिल्ले. कोंकणी भास उलोवपी लोक सगळे वाठारात नांवाजिल्ले आसात आनी ते समृध्द जीण जगत आसात देखून तांची भासूय समृध्द आसपाक जाय अशें तांणी सांगले. अशें लोकांच्या समृध्द भाशेक तिच्या हक्काचे स्थान मेळप सामकेच गरजेचें अशेंय तांणी सांगलें.

कोंकणी भाशीक लोक ज्या वाठारात आसात त्या वाठारात तांणी नामना मेळयिल्ली आसा अशें सांगून अध्यक्ष श्री. के. के. पै हांणी कोंकणी लोकांनी आपणाली बुधवंतकाय कोंकणीचे उदरगती खातीर उपयोग केली जाल्यार ती देशातली एक प्रतिभासंपन्न भास जावपाक शकतली म्हूण म्हळें.

गोंयचे राज्यपाल श्री. एस. के बॅनर्जी आनी मुख्यमंत्री श्रीमती शशिकला काकोडकर हांणी परिशदेक उपस्थीत रावन कोंकणीची उदरगत घडोवन हाडपाक सगळयांनी हातभार लावपाक जाय म्हुण सांगले.

**इकरावी परिशद : १९७६**

अखिल भारतीय कोंकणी साहित्य परिशदेचे इकरावे अधिवेशन मंगळूर शारात जालें. गोंय स्वतंत्र जाल्ल्यान गोंयकारां कडेन हेर वाठारातलो कोंकणी लोक अडचणे बगर संबंद दवरपाक शकतालो. ताजो लाब घेवन चार–पांयशीं वर्सां चेंपणाखाला वावुरपी अशो कोंकणी समाज मोकळ्या मनान वावुरपाक लागलो. गोंयची आनी गोंय भायली कोंकणी मनां एकठांय आयली आनी कोंकणी चळवळेचे बळगे दिशीं दिशीं घट जायत गेले. ताका लागून मंगळूरात जाल्ली इकरावी परिशद व्हडा दबाज्यान जाली. ती वेळ मेरेन केन्नाच जमूंक नाशिल्ले तितले लोक परिशदे वेळार एकठांय आयले. परिशदेच्या इतिहासात पयलेंच फावटी अध्यक्षाली गांवातल्यान शोभायात्रा काडली. सगळें वातावरण उत्साहान भरून गेले आनी परिशदेच्या वाठारात हजारांनी लोक आयले.

अखिल भारतीय कोंकणी साहित्य परिशदेच्या इकराव्या अधिवेशनाचे अध्यक्ष श्री. चंद्रकांत केणी हे आशिल्ले. कोंकणी साहित्य परिशदेचे अध्यक्ष स्थानाचो मान मेळोवपी हे तिसरे कोंकणी साहित्यीक आशिल्ले. येवकार समितीचे अध्यक्ष श्री. के. के. पै आशिल्ले. परिशदेचे उद्घाटण श्री. रामकृष्ण मिशनचे स्वामी विज्ञानंदजी हांणी केलें.

श्री. चंद्रकांत केणी हांणी कोंकणीचे उदरगती खातीर कोंकणी अकादमीची गरज आसा म्हण सांगून कोंकणीचो विज्ञानिक नदरेन अभ्यास जावपाक जाय आनी प्रमाण कोंकणी घडोवपाच्या वावराक नेट हाडूंक जाय म्हण आपणाल्या उलोवपांत सांगले. कोंकणीचो वाठार गोंय घटनेत आसपावला देखून त्या वाठाराची भास कोंकणीच घटनेच्या आठवे वळेरेत आसपावपाक जाय म्हून तांणी सांगलें. ते वर्स शणै गोंयबाब जन्म शताब्दी वर्स जाल्ल्यान तांचो उगडास करून कोंकणी समाजान आपणातलो न्यूनगंड ना करपाक जाय आनी आपणाले ध्येय पूर्ण जाय मेरेन थांबनासतना मुखार वचत रावपाक जाय अशें सांगून साहित्याच्यो विडियो कॅसॅटी काडून लिपी आनी निरक्षरपणाच्यो वणटी मोडून समाज एकवटीत करचो अशेंय तांणी सांगले.

कोंकणी समाजाचो उजळ इतिहास सांगून येवकार अध्यक्ष श्री. के. के. पै हांणी त्या उजळ कोंकणी इतिहासाचो चंदनाचो परमळ भारताच्या अस्तंत देगेर दक्षिणेक कन्या–कुमारी मेरेन परमळत आसा म्हूण सांगले.

अखिल भारतीय कोंकणी साहित्य परिशदेक एक घटना तयार करून संस्थेची नोंदणी करपाविशीं ह्या परिशदेंत भासाभास जावन गोंयात ताजी कचेरी आसची अशें परिशदेन थारायलें. तशेंच कोंकणी अकादमी घडोवची अशेंय थारायलें.

## बारावी परिशद : १९७८

अखिल भारतीय कोंकणी साहित्य परिशदेच्या इकरावे अधिवेशनांत मानून घेतिल्ल्या थारावाक अणसरून कोंकणी साहित्य परिशदेची नोंदणी जाल्ली. परिशदेन मानून घेतिल्या घटनेक अणसरून दर दोन वर्साती अखिल भारतीय कोंकणी साहित्य परिशदेचे अधिवेशन भरोवपाक जाय आशिल्ले. त्या घटनेक अणसरून कोंकणी भाशा मंडळ गोंय, कोंकणी भाशा मंडळ—मुंबय, कोंकणी भाशा मंडळ — कर्नाटक आनी कोंकणी भाशा प्रचार सभा—कोचीन ह्यो संस्था अखिल भारतीय कोंकणी साहित्य परिशदेच्या पाख्यातळातल्यो संस्था जाल्यो. मंगळूरात जाल्ल्या इकरावे अधिवेशना वेळार कोचीनच्या कोंकणी भाशा प्रचार सभेन कोचीनात परिशद घडोवन हाडपाचे आपोवणे दिल्लें. ते परिशदेन मानून घेतिल्ले. ताका अणसरून परिशदेचे बारावे अधिवेशन कोचीनात करपाचो निर्णय घेतलो.

अखिल भारतीय कोंकणी साहित्य परिशदेच्या बारावे अधिवेशनाचे अध्यक्ष श्री. रवींद्र केळेकार हे आशिल्ले. येवकार अध्यक्ष डॉ. जे. ए. भट हे आशिल्ले. परिशदेचें उद्घाटन केरळचे मुख्यमंत्री श्री ए. के. अँटेनी हांणी केलें. शेंकडयांनी वर्सां आदीं केरळात येवन राविल्ले कोंकणी लोक केरळच्या आनी मळयाळम भाशेच्या उदरगतीक हातभार लायत आयल्यात देखून तांच्या कोंकणी भाशेक सगळो तरेचो आदार दिवपाचे आपणाले कर्तव्य हाजी जाणीव केरळ सरकाराक आसा अशें तांणी उद्घाटन करतना केल्ल्या उलोवपात सांगले.

कोंकणी भाशेक भारतीय घटनेच्या आठवे वळेरेत आसपावपा खातीरूच न्हय तर हशें तरेची तांक आशिल्ल्या हेर भासांकूय आसपावपचो यत्न कोंकणी खातीर वावुरपी लोकांनी आनी संस्थानी करूंक जाय अशें सांगुन कोंकणी संस्कृतीचे दिव्य भव्य मंदिर आमी आमच्याच जिवितांत उबे करून दाखयतले म्हणपाचें "पिशें" तांका लागत जाल्यार ह्या देशांत ते केदो चमत्कार करून दाखयतीत सांगु नज अशें अध्यक्षपदा वेल्यान उलयतना रवींद्र केळेकार हाणी सांगले.

इतिहासांतल्या घडणुकेक लागून गोंयांतसून केरळांत येवन राविल्ल्या कोंकणी लोकांक स्थानीक लोकांनी केन्नाच परकेपणान वागयलें ना म्हूण येवकार अध्यक्ष डॉ. जे. ए. भट हांणी उलयतना सांगले. केरळांतल्या कोंकणी लोकांनी कोंकणीच्या आनी हेर वाठारात केल्ल्या कर्तुबांची तांणी माहिती दिली.

ही केरळात जावपी-पयली कोंकणी परिशद जाल्ल्यान आनी त्या परिशदेक व्हड प्रमाणात गोंयकार प्रतिनिधी आयिल्ल्यान ही परिशद व्हडा दबाजान मनयली. वाजत गाजत काडिल्ले शोभायात्रेंत शिन्गारिल्लो हतीय आशिल्ल्यान ताका आगळे म्हत्व आयिल्ले.

## तेरावी परिशद : १९८०

अखिल भारतीय कोंकणी साहित्य परिशदेची तेरावी बसका १९८० सालांत फेब्रुवारी १२ आनी १३ तारखे दिसांनी मुंबयत जाली. परिशदेचे अध्यक्ष श्री. एन. पुरूषोत्तम मल्ल्या हे आशिल्ले. येवकार समितीचे अध्यक्ष श्री. एफ. जे. मार्तिरीस हे आशिल्ले. परीशदेचे उद्घाटण गोंयचे मुख्यमंत्री श्री. प्रतापसिं राणे हाणी केलें. आपणांले सरकार कोंकणीच्या उदरगती आड ना म्हूण श्री. प्रतापसिंग राणे हांणी आपणाल्या उलोवपांत सांगले.

कोंकणीची निजाची लिपी देवनागरी आसून पुर्विल्ले कांळांत कोंकणी देवनागरी लिपीतच बरयताले म्हूण श्री. एन. पुरुषोत्तम मल्ल्या हांजा हॉर्टीकस मलबारीकेस ह्या भारतातल्या सगळ्यात पयली छापिल्ल्या पुस्तकांनले कोंकणी, देवनागरी लिपीतच आसा म्हूण सांगलें. विंगड - विंगड परिस्थितीक अणसरून कोंकणी खातीर विंगड - विंगड लिप्यांचो उपयोग जरी करत आयले तरी फुडारात फकत देवनागरी लिपीचोच उपयोग जावपाक जाय म्हूणय तांणी सांगलें.

मुंबयच्या कोंकणी भाशा मंडळान कोंकणी चळवळ घडोवन हाडपांत म्हत्वाचो वांटो उचलिल्लो आसून कोंकणी खातीर वावुरपी जायते गोंयकार मंडळाच्या कार्यावळीक वांटो घेवन कोंकणी खातीर वावुरपाची स्फूर्त मेळोवपाक शकले म्हूण येवकार अध्यक्ष श्री. एफ. जे. मार्तिरीस हाणी आपणाल्यां उलोवपांत सांगलें.

गोंयात कोंकणी तिजे हक्काचे स्थान मेळोवन दिवपाविशी परिशदेत भासाभास जाली. भारतीय राज्य घटनेत कोंकणीचो आसपाव करची मागणी परिशदेन केंद्र सरकाराक एका ठरावान केली.

### चौदावी परिशद : १९८२

अखिल भारतीय कोंकणी साहित्य परिशदेचे चौदावे अधिवेशन गोंयात पणजे शारात १९८२ सालात फेब्रुवारी २७ आनी २८ तारखे दिसा व्हडा दबाज्यान जाले. श्री. व्ही. जे. पी. साल्दाना परिशदेचे अध्यक्ष आशिल्ले. श्री. उदय भेंब्रो हे येवकार अध्यक्ष आशिल्ले. केंद्र साहित्य अकादमीचे अध्यक्ष डॉ. उमाशंकर जोशी हांणी परिशदेचे उद्घाटण केलें. सोबीत गोंयात येवन गोड उतरांनी भरिल्ली कोंकणी भास आयकतना मनाक भोव खोम भोगता म्हूण श्री. उमाशंकर जोशी हांणी परिशदेचे उद्घाटन करतना सांगले.

संकटाचो हुंवार येवनय शेकानशेक तिगून उरिल्ली कोंकणी मायभास सोडून हेर भाशेक वेंग मारपाची प्रवृत्ती जी हाली वांडटा ताका आलांशिरो दिनासतना आमचो नीज कोंकणी व्यक्तित्व उगते करपाचो उलो श्री. व्ही. जे. पी. साल्दाना हांणी आपणाले अध्यक्षीय उलोवपांत सांगले.

गोंयात मुळावे शिक्षण कोंकणीतल्यान दिवपाचो आग्रह करपाक जाय म्हूण येवकार अध्यक्ष श्री. उदय भेंब्रे हांणी आपणाल्या उलोवपांत सांगले.

अखिल भारतीय कोंकणी साहित्य परिशदेच्या कार्यावळी वेळार केंद्र साहित्य अकादमीन देशांतल्या मान्यताय मेळयिल्ल्या सगळ्या भाशेंतल्या लेखकांक अकादमीचो पुरस्कार दिवपाचो सुवाळो दवरून घेतिल्ल्यान सगळे सगळेभाशेचे नामनेचे बरोवपी परिशदेक पाविल्ल्यान कोंकणी बरोवप्यांक ताजो भोव बरो लाब जांलो. भोव भाशीक कवी संमेलनाची कार्यावळय घडोवन हाडिल्ली.

### पंदरावी परिशद : १९८४

अखिल भारतीय कोंकणी साहित्य परिशदेचे पंद्रावे अधिवेशन १९८४ सालात मे ११, १२ आनी १३ तारखेक जाले. परिशदेचे अध्यक्ष श्री. नागेश डी. सोंदे हे आशिल्ले. येवकार समितीचे अध्यक्ष श्री. एम. यू. हट्टीकुडूर हे आशिल्ले. कर्नाटकाचे राज्यपाल श्री. ए. एन. बॅनर्जी हांणी परिशदेचे उद्घाटन केले. कर्नाटकाचे संस्कृताय आनी युवा खात्याचे राज्यमंत्री श्री. जीवराज अळवा हांच्या हातान पुस्तकांचे प्रदर्शनाचे उद्घाटन केले. गोंयचे उद्योग मंत्री श्री. अनंत नरसिंह नायक हांच्या हातान यादस्तिकेचे प्रकाशन केलें.

विंगड - विंगड भाशेंतले साहित्य अनुवाद करून कोंकणी साहित्य गिरेस्त करपाक जाय अशें अध्यक्षपदा वेल्यान उलयतना श्री. नागेश सोंदे हांणी सांगले. सगळ्या कोंकणी लोकांनी कोंकणी चळवळेंत वांटो घेवपाक चड वाव मेळपाचे नदरेन अखिल भारतीय कोंकणी साहित्य परिशदेच्या घटनेंत गरजेचो बदल घडोवन हाडपाची सुचोवणीय तांणी आपणाल्या उलोवपात केली.

कोंकणीची उदरगत करपाच्या वावरात कर्नाटकातल्या कोंकणी लोकांनी चड प्रमाणात वावुरपाक जाय म्हूण येवकार अध्यक्ष श्री. एम. यू. हट्टी कुडूर हांणी आपणल्या उलोवपात सांगलें.

कोंकणी भाशेक भारतीय राज्य घटनेंत आसपाव घेवपाची मागणी ह्या परिशदेत केंद्र सरकाराक एकमतान केली.

### सोळावी परिशद : १९८६

अखिल भारतीय कोंकणी साहित्य परिशदेचे सोळावे अधिवेशन कोचीनात १९८६ सालात मे २४ तारखे दिसांनी जाले. श्री. उदय भेंब्रो हे परिशदेचे अध्यक्ष आशिल्ले. श्री. एन. पुरुषोत्तम मल्ल्या हे येवकार अध्यक्ष आशिल्ले. केरळ सरकारचो मंत्री श्रीमती एम. कमलम हांणी परिशदेचे उदघाटन केलें. मुखेल सोयरे म्हूण कर्नाटकाचे उद्योग राज्यमंत्री श्री आर. व्ही. देशपांडे हाजीर आशिल्ले.

गोंय घटक राज्य जाले आसलें तरी थंयची राजभास कोंकणी जावंक ना देखून ताजे खातीर झुजपाची गरज आसा अशें अध्यक्ष श्री. उदय भेंब्रो हांणी सांगुन हेर राज्यांतल्या कोंकणी लोकांक भाशीक अल्पसंख्य मानून तांकां फावत्यो सवलत्यो दिवपाची सरकाराकडेन तांणी मागणी केली. कोंकणीक घटनेच्या आठवे वळेरेंत आसपावाची मागणी तांणी केंद्र सरकारा

कडेत केली.

केरळान कोंकणी भाशीक लोकांनी कोंकणी भाशा प्रचार सभे वरवीं केल्ल्या कार्याचो उल्लेख येवकार अध्यक्ष श्री. एन. पूरूषोत्तम मल्ल्या हांणी करून केरळ सरकार कोंकणी शिक्षणा खातीर वाव दीत आसा म्हुण खोस परगटायली.

कोंकणी पुस्तकांचेत प्रकाशन पद्मश्री डॉ. के. एन. पै हांच्या हातान जाले.

केरळचे राज्यपाल श्री. पी रामचंद्रन हे निमाणच्या दबाज्या वेळार हाजीर आशिल्ले. तांणी त्या सुवाळयाचे उद्घाटन केल्लें.

### सतरावी परिशद : १९८९

अखिल भारतीय कोंकणी साहित्य परिशदेचे सतरावे अधिवेशन १९८९ सालात जानेवारी ६ आनी ७ तारखे दिसांनी मणिपालात जाले. मणिपाल हे उडपी शारा वाठारात येता. उडपीत दुसरी परिशद जाल्ली देखून ही त्या वाठारात जायपी दुसरी परिशद अशें म्हणूंक हरकत ना. ही परिशद जाल्ले वर्सा कोंकणी परिशदेची सुरवात जावन ५० वर्सा जातात देखून ती व्हडा दबाज्यान मनोवपाचो निर्णय घेतलो. श्री. माधव विट्ठल कामत हे परिशदेचे अध्यक्ष आशिल्ले. श्री. टी. रमेश उपेंद्र पै हे परिशदेचे येवकार अध्यक्ष आशिल्ले. केंद्र सरकारचे दुडवां खात्याचे राज्यमंत्रीं श्री. एदवार्द फालेरो हांचे हातान परिशदेचे उक्तावण जाले. केंद्र सरकारचे धोरण सगळ्या भासांक अुदरगतीक वाव दिवपाचे आसा देखून कोंकणीक चडात चड आदार मेळोवन दिवपाक आपूण वावुरतलो म्हूण तांणी सांगले.

गोंय, कर्नाटक, महाराष्ट्र, केरळ ह्या राज्यांनी आनी देशातल्या हेर वाठारांनी शिपडिल्ल्या अख्या कोंकणी समाजात एकवटाची भावना घट करपाची गरज आसा अशें परिशदेचे अध्यक्ष श्री. एम. व्ही. कामत हांणी उलयतना सांगले. विगंड - विगंड वाठारात आशिल्ल्या कोंकणी लोकांमदी संपर्क सादपा खातीर बुदवंतकायेन येवजण्यो आंखल्यो जायत तर कोंकणीक व्हड पुडार आसा अशेंय ताणी सांगले.

कोंकणीचे उदरगती खातीर डॉ. टी. एम. ए. पै. फौंडेशनान हातान घेतिल्ल्या वावराचो नियाळ येवकार अध्यक्ष श्री. टी. रमेश पै हांणी घेतलो.

#### भांगरा उत्सव सुवाळो

अखिल भारतीय कोंकणी साहित्य परिशदेक ८ जुलय, १९८९ दिसा पन्नास वर्सा पूर्ण जाली. तो दीस व्हडा दबाज्यान मनोवपाचो निर्णय घेतलो. पयली परिशद कारवारात जाल्ल्यान हो पन्नासावो उत्सव त्या शारात मनोवपाचो निर्णय घेतलो आनी परिशदेचे अध्यक्ष श्री. माधव विट्ठल कामत हांच्या अध्यक्षते खाला एक दिसाची कार्यावळ घडोवन हाडली.

---

श्री एन शिवदास, सरचिटणीस, अ. भा. कों. सा. परिशद, अठरावें अधिवेशन हाणी हें यादस्तीक, 'अपुरबाय प्रिंटर्स' वळवय हांगा छापून, प्रो. लक्ष्मणराव सरदेसाय नगर, रामनाथी, गोंय हांगासर उजवाडा हाडलें.
मुखचित्र : श्रीधर कामत बांबोळकार, मुखचित्र छापणावळ : राजेश तळावलीकार, फोंडें